Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 28 • 18 - 24 अप्रैल, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 16-04-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

अर्हत उवाच

वितिगिंछसमावण्णा,
पंथाणं व अकोविया।

व्रण को अधिक खुजलाना ठीक नहीं है, क्योंकि उससे कठिनाई पैदा होती है।

❀ ❀ ❀

अध्ययन से ज्ञान की अभिवृद्धि और चित्त की एकाग्रता बढ़ती है : आचार्यश्री महाश्रमण

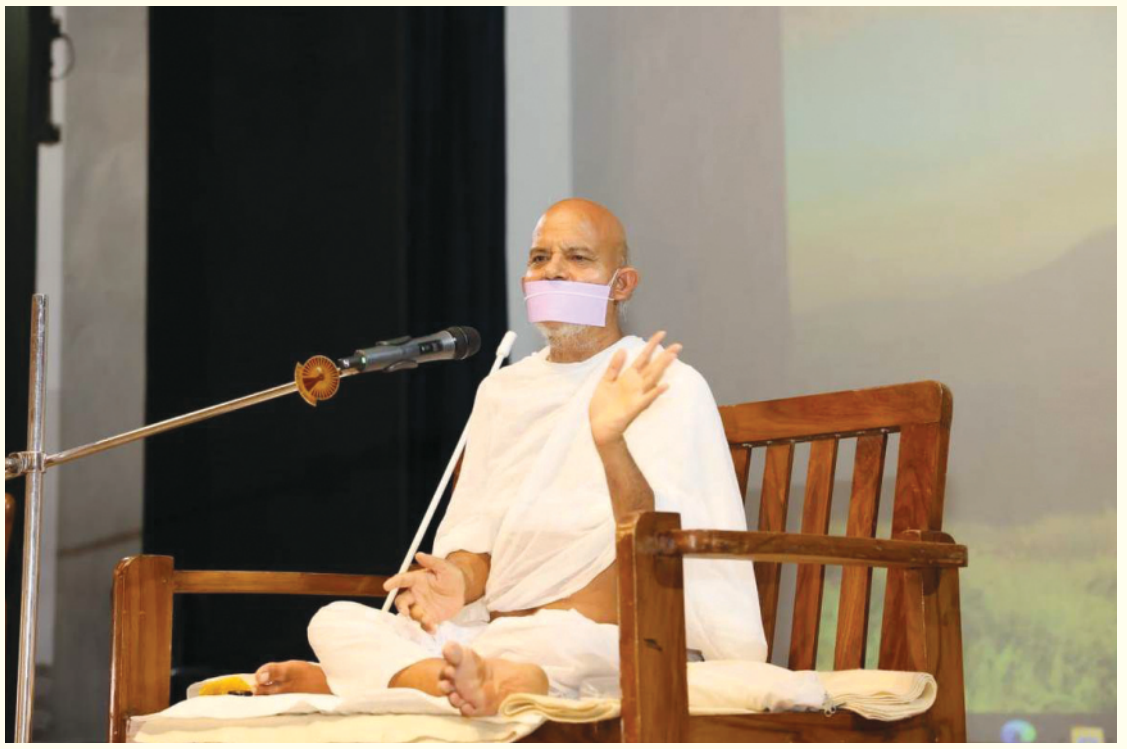

जिंदल स्कूल, हिसार, ६ अप्रैल, २०२२

संबोध के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज प्रातः हांसी से विहार कर जिंदल स्कूल के प्रांगण में पधारे। मार्ग में परम विभु स्थानीय विधायक विनोद के घर पर पधारे। श्री पार्श्वनाथ जैन अतिशय क्षेत्र भी पधारे

महायायावर ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान अर्जन के लिए अध्ययन भी करना अपेक्षित होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि मुझे श्रुत-ज्ञान मिलेगा, इसलिए अध्ययन करना चाहिए। अध्ययन करने का पहला लाभ है–ज्ञान प्राप्त होता है। दूसरा लाभ बताया है–मैं एकाग्रचित्त बन जाऊँगा।

आदमी का चित्त-मन चंचल भी रहता है। दार्शनिक से एक युवक ने चार प्रश्न पूछे। पहला प्रश्न–दुनिया में सबसे बड़ी चीज क्या है? उत्तर मिला–आकाश। दूसरा प्रश्न–सबसे सरल काम क्या है? उत्तर मिला–दूसरों की निंदा-आलोचना करना या बिना माँगे सलाह देना। तीसरा प्रश्न–सबसे कठिन काम क्या है? उत्तर मिला–अपनी पहचान करना। चौथा प्रश्न–सबसे ज्यादा गतिशील कौन है? उत्तर मिला–आदमी का विचार-मन।

ज्ञान के द्वारा मन को एकाग्र किया जा सकता है। ज्यों-ज्यों गहरा ज्ञान होता है, आदमी का चित्त एकाग्र होता जाता है। ज्ञान का तीसरा लाभ शास्त्र में बताया–मैं अपने आपको स्थापित करूँगा। ज्ञान है, तो अच्छे मार्ग पर स्थापित हो सकता है। चौथा लाभ बताया–मैं स्वयं सन्मार्ग में स्थित होकर दूसरे को भी सन्मार्ग में स्थापित करूँगा। जैसे साधु स्वयं सन्मार्ग पर चलते हैं और दूसरों को भी धर्म मार्ग पर चलाने का प्रयास करते हैं।

आज हम लोग इस विद्या-संस्थान में आए हैं। ये स्थान परिचित है। अनेक बार यहाँ आना हो चुका है। जिंदल परिवार से संबंधित विद्यालय है। विद्या संस्थान विद्या का मंदिर होता है। सृष्टि में देव शक्तियाँ भी हैं। खराब और अच्छी दोनों चीजें सृष्टि में मिल सकती हैं। सरस्वती यानी विद्या आराधना दिव्य शक्तियाँ सृष्टि में होती है।

विद्यालय में ज्ञान विकास के साथ विद्यार्थी में अच्छे संस्कार अहिंसा, नैतिकता, विनयशीलता, विवेकशीलता, संयम की चेतना ऐसे संस्कार जो गृहस्थ जीवन के लिए आवश्यक हैं, का भी विकास हो। कितने विषय और भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। इनके साथ अध्यात्म विद्या, जीवन विद्या भी पढ़ाई जाए।

जिंदल परिवार का आचार्यों के साथ अच्छा संपर्क रहा है। सावित्रीजी तो एक श्राविका के रूप में हैं। श्राविका होना बड़ी बात होती है। जीवन-भर आदमी धर्म की चेतना में रह सकता है। अभी आप जैविभा इंस्टीट्यूट में कुलाधिपति पद पर सेवाएँ दे रही हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

आचार्य श्री महाप्रज्ञ 13वां महाप्रयाण दिवस

वैशाख कृष्णा-11 (26 अप्रैल, 2022)

:: श्रद्धाप्रणत::

तेरापंथ टाइम्स परिवार

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस

महापुरुषों के दिखाए रास्ते पर चलने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

हिसार, १० अप्रैल, २०२२

चैत्र शुक्ला नवमी, रामनवमी, नवरात्रा की संपन्नता और आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस। २६२ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला नवमी वि०सं० १८१७ को तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने बगड़ी नगर में स्थानकवासी संप्रदाय से अभिनिष्क्रमण किया था। उस समय का तेरापंथ धर्मसंघ वर्तमान में एक विशाल वट वृक्ष के रूप में परे विश्व में फैला हुआ है।

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर, तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता, वर्तमान के भिक्षु ने आज के दिन मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल क्या है? दुनिया में अनेक प्रकार के मंगल हो सकते हैं। परंतु इष्ट मंगल धर्म होता है। धर्म से बड़ा दुनिया में कोई मंगल नहीं हो सकता।

प्रश्न है, धर्म क्या चीज है? जिसके द्वारा आत्मा का कल्याण हो वह धर्म होता है। धर्म के तीन प्रकार हैं–अहिंसा, संयम और तप धर्म है। जहाँ अहिंसा, संयम और तप है, वहाँ मंगल है। आदमी-प्राणी के अपने किए हुए कर्म होते हैं। कर्मों के कारण आदमी को दुःख भी भोगना पड़ सकता है। तो कर्मों के कारण भौतिक सुख भी मिल सकते हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 - 24 अप्रैल, 2022

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

विद्यार्जन के साथ संस्कारों का अर्जन और सृजन भी हो : आचार्यश्री महाश्रमण

मिलकपुर-II, ७ अप्रैल, २०२२

विश्व शांति के प्रेरक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः मिलकपुर के आनंद स्कूल ऑफ एक्सीलेंस विद्यालय परिसर में पधारे। स्कूल के अनेक विद्यार्थियों सहित श्रावक समाज को प्रतिबोधित करते हुए फरमाया कि ध्यान एक शब्द है। धार्मिक साहित्य में ध्यान पर प्रकाश डाला गया है। ध्यान शब्द हमारी बोलचाल की भाषा में भी उपयोग में आता है।

साधना का एक प्रयोग है—ध्यान। जैन वाङ्मय में भी ध्यान शब्द काम में लिया गया है। अन्य साहित्य में भी ध्यान शब्द काम में लिया गया है। ध्यान यानी चिंतन करना। चिंतन हमारा कई बार बिखर जाता है। सधनता-एकाग्रता नहीं रहती है।

एकाग्रता युक्त चिंतन है, वह ध्यान है। एक आलंबन पर, एक बिंदु पर, एक केंद्र पर मन को नियोजित कर देना, वह ध्यान है। योग निरोध भी ध्यान है। न चिंतन करना, न हिलना, न बोलना। स्थिरता की साधना भी ध्यान है। आध्यात्मिक जगत में ध्यान की बड़ी महिमा है। जहाँ शरीर में शीर्ष का जो महत्त्वपूर्ण स्थान है, वृक्ष में मूल का जो आधारभूत स्थान है, धर्म के क्षेत्र में, साधु धर्म में इसी प्रकार ध्यान का महत्त्व है।

ध्यान में सघन चिंतन, एकाग्र चिंतन या निर्विचार आदि की स्थितियाँ होती हैं। विद्यार्थी जीवन में भी एकाग्रता रहे। मन एकाग्र रहे। एकाग्रता एक शक्ति है। परंतु एकाग्रता निर्मल है या मल्लिन है। जहाँ राग-द्वेष मुक्त एकाग्रता है, वह निर्मल एकाग्रता है। जहाँ राग-द्वेष से जुड़ी एकाग्रता होती है, वह मल्लिन एकाग्रता हो जाती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि साथ में रहने वाला ही साथी के चरित्र को अच्छी तरह जान सकता है।

विद्यार्थी बैठे हैं। ये बचपन विद्या अर्जन का समय है। प्रथम वय में विद्या का अर्जन नहीं किया तो कमी की बात रह सकती है। विद्या अर्जन के साथ संस्कार अर्जन, संस्कार सृजन का काम भी चलना चाहिए। जीवन-विज्ञान में जीने का तरीका समझाया जाता है। विद्या संस्थानों में अनेक विषयों के साथ-साथ योग, ध्यान, नैतिकता, ईमानदारी, सद्भावना के संस्कार भी विद्यार्थियों को मिलते रहें। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि सुसंस्कारों के सिद्धांत पर अटल रहें।

मेरे सामने बच्चे बैठे हैं, समझ गए होंगे कि परमात्मा सब जगह देखते हैं, तो छिपकर भी बुरा काम नहीं करना चाहिए। बुरे काम को आत्मा देख लेती है। किए कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। ईमानदारी जीवन में रहे। विद्यार्थी में अध्यात्म के, नैतिकता के संस्कार भी उनके भीतर में परोसने का प्रयास होता रहे। साथ में मन की एकाग्रता भी रहे। महाप्राण ध्वनि का पूज्यप्रवर ने प्रयोग करवाया।

कोई भी कार्य करें हमारे मन की एकाग्रता जितनी अच्छी रहती है तो वह कार्य अच्छा हो सकता है। एकाग्रता के लिए जप-ध्यान आदि करें। मन एकाग्र हो और साथ में विद्यार्थी अच्छा परिश्रम करें तो कुछ सिद्धि मिल सकती है। अभ्यास करने से मन के भाव, मन के सपने पूरे हो सकते हैं।

आनंद विद्यालय के साथ आनंद जुड़ा हुआ रहे। विद्यार्थी पढ़ें तो उनमें भी आनंद आना चाहिए। नाम भी आनंद और कार्य में भी आनंद। पूज्यप्रवर ने विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण करवाया।

आनंद स्कूल के डायरेक्टर आनंद भट्टेवाल ने पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में अपने भाव उद्घाटित किए। स्कूल की प्रिंसिपल रेणु अनेजा, एडवोकेट लाजपतराय ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्कूल के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर के अभिनंदन में स्वागत गीत का मधुर संगान किया।

व्यवस्था समिति द्वारा स्कूल के डायरेक्टर का साहित्य से सम्मान किया। स्कूल के डायरेक्टर आनंद भट्टेवाल ने अपने दोनों भाइयों के साथ पूज्यप्रवर से गुरुधारणा स्वीकार की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महापुरुषों के दिखाए रास्ते पर चलने....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दुनिया में अनेक मनुष्य ऐसे होते हैं, जो साधुत्व को स्वीकार करते हैं। साधु बनकर धर्म की विशेष साधना करते हैं। आज चैत्र शुक्ला नवमी है। इस दिन का अपना प्रासंगिक महत्त्व है। अच्छे नाम के साथ जुड़ने से उस तिथि का विशेष महत्त्व हो जाता है। चैत्र शुक्ला नवमी रामचंद्रजी के साथ रामनवमी के रूप में जुड़ी है, तो हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य परमपूजनीय, परम श्रद्धेय, परम वंदनीय भिक्षु स्वामी के साथ भी जुड़ी हुई है।

दुनिया का भाग्य है कि इसमें महापुरुष भी होते रहते हैं। हमारे जैन धर्म में भी जैन रामायण चलती है। गुरुदेव तुलसी भी रामायण का व्याख्यान फरमाया करते थे। जैन धर्म के अनुसार भगवान राम मोक्ष में चले गए हैं। कितने लोग राम नाम लेते होंगे। पवित्र आत्मा का नाम स्मरण करना भी बढ़िया है। जब राम में रा बोलते हैं तो होठ खुल जाते हैं, म बोलने पर होठ बंद हो जाते हैं। मुँह खुलने पर भीतर का विकार बाहर निकल जाता है। भीतर से शुद्धता हो जाती है। म बोलने पर मुँह बंद होने पर बाहर का पाप भीतर नहीं आता है।

राम के नाम लेने के साथ पाप को भी छोड़ो। राम नाम का अपना महत्त्व है। राम की जो गुणात्मकता है, वो भीतर रहे।

हमारे धर्मसंघ को शुरू हुए लगभग २६२ वर्ष हो गए हैं। आज ही के दिन आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण किया था, धर्म क्रांति की थी। उन्होंने धर्मसंघ में मर्यादाएँ बनाई। हम इस कल्पतरु रूपी धर्मसंघ में साधना कर रहे हैं।

आचार्य भिक्षु में बुद्धि-बल भी था। साथ में आस्था और श्रद्धा का बल भी था। भगवान महावीर और आगमों के प्रति अटूट आस्था थी। उनका आचार भी उत्तम था। तेरापंथ की पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ आज का दिन है। महापुरुषों ने हमें जो रास्ते दिखाए हैं, हम उन मार्गों पर चलें। राम भी आदर्श पुरुष थे। उनके जीवन प्रसंग को बताया कि हम राम से यह प्रेरणा लें कि सत्ता से मोह न हो। राम की त्याग की चेतना को समझें।

गुरुदेव तुलसी भी तुलसी राम थे, उन्होंने भी पद का विसर्जन किया था। आज का दिन हमें प्रेरणा देने वाला बने, यह काम्य है।

आज हिसार में आना हुआ है। हिसार में कई साध्वियाँ तो कितने वर्षों बाद मिली हैं। सभी साध्वियों का साधना का अच्छा क्रम चलता रहे, अच्छी धर्म प्रभावना होती रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आज का दिन विशेष है। सत्य को प्राप्त करने का दिन है। जो व्यक्ति सत्य को पाना चाहता है, वह बहुत चीजों को छोड़ता भी है। आचार्य भिक्षु जिस पथ पर चले उस पथ पर हम आगे बढ़ते हुए प्रगति करते रहें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में हिसार के मेयर गौतम सरदाना ने नगर की चाबी पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित की। परम पावन ने फरमाया कि नगरनिगम हिसार की Key of City है, साथ में ताला कहाँ है। नगर की Key of City प्रदान करना बहुत बड़ा सम्मान होता है। इतना समर्पण करना विशेष बात है। हिसार की जनता में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। मैं आपके सम्मान का सम्मान करता हूँ।

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति सावित्र जिंदल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति पूज्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संजय जैन, मेयर गौतम सरदाना, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, जैन समाज से भी नवीन जैन, तेयुप ने संकल्पों के वृक्ष से अपने भावों की अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की।

पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आसपास के चतुर्मासिक क्षेत्रों से पधारे मुनि जंबूकुमार जी, मुनि धवल कुमार जी, साध्वी यशोधरा जी, साध्वी आनंदप्रभाजी एवं साध्वीवृंद ने समुह गीत से अपने भावों की अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अध्ययन से ज्ञान की अभिवृद्धि....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ज्ञान का दान भी एक बड़ा दान होता है। ज्ञान के बिना आदमी एक प्रकार से अंधा सा रह सकता है। विद्यार्थी ज्ञान के विकास के साथ अध्यात्म विद्या को भी ग्रहण करने का प्रयास करें। विद्यार्थियों का जीवन सशक्त बन सकता है। नैतिक मूल्यों के प्रति रूझान हो।

पास होना एक बात है, विकास होना अलग बात है। ज्ञान के विकास की भीतर में ललक हो। यह विद्यार्थी जगत के लिए अच्छी बात हो सकती है। सेवा के साथ अच्छे संस्कार भी जीवन में हों। विद्यार्थी विद्यालय में ज्ञान संपन्न और सदाचार संपन्न हो। विद्या और आचार का बड़ा महत्त्व होता है। यह एक दृष्टांत से समझाया कि लगान के आगे वरदान की भी अपेक्षा नहीं होती है।

शिक्षक भी परिश्रमशील, शिक्षार्थी भी परिश्रमशील, संचालक मंडल और माता-पिता भी जागरूक रहें। इन चारों की जागरूकता से विद्यालय में अच्छा विकास हो सकता है। अच्छा निर्माण करने वाला संस्थान बन सकता है। इन विद्या संस्थानों से अच्छे विद्यार्थियों का निर्माण हो। ये जिंदल परिवार से संबंधित संस्थान भी ज्ञान और आचार की शिक्षा देने वाला संस्थान बने, मंगलकामना।

उग्रविहारी, तपस्वी मुनि कमल कुमार जी ने अपने भाव पूज्यप्रवर के चरणों में उद्घाटित किए।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में जगदीश जिंदल, सावित्री जिंदल, पूर्व एसडीएम अमरदीप जैन, हिसार सभाध्यक्ष संजय जैन एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जीवन में सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र का संगम होता है तो हम साधक से सिद्ध बन सकते हैं।

धरती पर तीन रत्न हैं-जल, अन्न और सुभाषित : आचार्यश्री महाश्रमण

आर्यनगर, ११ अप्रैल, २०२२

हिसार का ही उपनगर आर्यनगर जिसका पुराना नाम कुरड़ी था। तेरापंथ के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः आर्यनगर के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में पधारे। जनजन के तारक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने जनसभा को प्रतिबोध देते हुए फरमाया कि शरीर को चलाने के लिए हवा, पानी और भोजन की आवश्यकता होती है। जीवन की ये प्रथम कोटि की अपेक्षाएँ हैं।

इन तीनों में सबसे ज्यादा जरूरी हवा है, बाद में पानी व भोजन है। धरती पर तीन रत्न हैं–जल, अन्न और सुभाषित है। मूढ़ लोग पत्थर के टुकड़ों को रत्न मान लेते हैं। रत्नों के बिना आदमी जिंदा रह जाए पर जल और अन्न के बिना कैसे जिंदा रहे। सुभाषित के मैं दो अर्थ करता हूँ–एक तो शास्त्रों की वाणी, आर्षवाणी, दूसरी मीठा बोलना, अच्छा बोलना।

अच्छा बोलना आदमी दूसरे को चित्त समाधि पहुँचा सकता है। दुःभाषित बोलने वाला समाधिस्थ आदमी को असमाधि में पहुँचाने में निमित्त बन सकता है। शास्त्रों की वाणी, शास्त्रों का एक-एक वाक्य ऐसा होता है, जो आदमी के जीवन की दिशा और दशा बदल सकता है।

समता धर्म का आख्यान करना चाहिए। शास्त्रों की बातों को मनन कर ग्रहण-आत्मसात किया जाए तो आत्मा का कल्याण हो सकता है। प्रथम कोटि की जीवन की आवश्यकता में हवा, जल और भोजन है। दूसरी कोटि में वस्त्र और आवास होते हैं। तीसरे कोटि की आवश्यकता है–शिक्षा और चिकित्सा। ये जीवन स्तर की तीन आवश्यकताएँ हैं।

इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आदमी को प्रयास भी करना होता है। आदमी कई प्रकार के नशे भी करता है। इनकी जीवन में आवश्यकता है क्या? यह चिंतन का विषय है। इसमें गरीबों की गरीबी और बढ़ सकती है। एक प्रसंग से समझाया कि नशामुक्त बनने से आदमी के पास बचत हो सकती है।

कितने लोग नशे की गिरफ्त में आकर अपना नुकसान कर लेते हैं। नशे से बचने का प्रयास करें। नशा पहले थोड़ा-थोड़ा शुरू करता है। फिर घास में चिंगारी जैसे आग लगा देती है, वैसे आदमी नशे का आदि हो जाता है। पहले आदमी नशा करता है, बाद में नशा आदमी को खाने लग जाता है।

पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों को नशा न करने के संकल्प करवाए। त्याग किया है तो संकल्प शक्ति मजबूत हो। त्याग को तोड़ने का प्रयास न करें। नशे से दूराव रहे। लोग नशामुक्त बनें और उनकी दशा भी अच्छी रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में आर्यनगर सभाध्यक्ष देवराज जैन, मंत्री प्रदीप जैन, अमित जैन, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, मंजु जैन, कन्या मंडल, स्कूल से अनुपसिंह, सावित्री जिंदल व सुरेंद्र जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म ऐसा तत्त्व है, जो हमारे व्यवहार को भी विशुद्ध बना देता है : आचार्यश्री महाश्रमण

लोहारी जाटू, ६ अप्रैल, २०२२

सूर्य धीरे-धीरे अपना तेज बढ़ा रहा है, तो अध्यात्म जगत के भास्कर आचार्यश्री महाश्रमण जी भी अपने तप-तेज से जन-जन का उद्धार करते हुए सरदारशहर की ओर अग्रसर है। महामनीषी आचार्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म एक ऐसा तत्त्व है, जो हमारे व्यवहार को भी विशुद्ध बना देता है।

धर्म की अनेक बड़ी-बड़ी बातें होती हैं। साधु के लिए धर्म की बड़ी बातें हैं। गृहस्थ हैं, धर्म की बड़ी बातों का आचरण करने में सक्षम न भी हो तो अणुव्रत जैसी सामान्य व्यवहार की बातें स्वीकार कर ले तो गृहस्थोचित व्यवहार हो सकता है। साथ में धर्म से भावित भी हो सकता है।

एक घटना प्रसंग से समझाते हुए करुणानिधि ने फरमाया कि सामान्य बातें जो हमारे जीवन में काम आने वाली हैं, उनसे जीवन अच्छा रह सकता है। धर्म की बातें इस जीवन को भी अच्छा बना देती हैं और आगे परलोक भी अच्छा रह सकता है।

गुरुजी ने राजा को समझाते हुए कहा कि गृहस्थ के लिए सामान्य सी बातें पहली बात है–पात्र में दान देना चाहिए। साधु घर में आ गया, साधु को कोई चीज की अपेक्षा है और गृहस्थ के पास वह उपलब्ध है, तो साधु को दान दो। साधु शुद्ध हो, वस्तु भी ठीक हो, देने वाला भी शुद्ध हो तो दान बढ़िया हो सकता है।

दूसरी बात है–गुरु सुविनय। त्यागी संत-गुरुजन है, तो उनके प्रति विनय का व्यवहार। हाथ जोड़ो, अभिनंदन करो। गुरु के साथ असद् व्यवहार नहीं करना चाहिए।

तीसरी बात है–सब प्राणियों के प्रति दया-अनुकंपा का भाव रखना। मैं किसी के सुख-शांति में बाधा पैदा न करूँ। तीर्थंकर सब जीवों का कल्याण करते हैं, उन पर दया करते हैं। इसलिए वे प्रवचन करते हैं।

चौथी बात है–न्यायोचित बर्ताव होना चाहिए। अनैतिकता से आदमी बचे। किसी के साथ ठगी की बात न हो। एक प्रसंग से समझाया कि हम किसी के साथ धोखाधड़ी न करें। पाँचवीं बात है–पर का हित हो ऐसे कार्य में रुचि लेनी चाहिए। छठी बात है–धन-लक्ष्मी का मद नहीं करना चाहिए।

सातवीं बात है–अच्छों की संगति करनी चाहिए। साधुओं–सज्जनों की संगति करनी चाहिए। ताकि अच्छी बातें दिमाग में आती रहें। ये सात सामान्य धर्म की बातें हैं। 'सत्-संगत से सुख मिलता है' गीत के एक पद्य का सुमधुर संगान किया। राजा गुरुजी की सामान्य धर्म की बातें समझ गया। और जीवन में उतारने का प्रयास करने का आश्वासन दिया।

प्रवचन प्रारंभ होते ही श्रावक देशराज का स्वास्थ्य अस्वस्थ हो गया। करुणा सागर ने कृपा कर प्रवचन छोड़ उनको दर्शन देकर मंगलपाठ का श्रवण करवाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने करते हुए समझाया कि मंजिल पाने के लिए विश्वास चाहिए।

आज सायं लगभग साढ़े छह किमी का विहार कर परम पावन बवानी खेड़ा पधारे। बवानी खेड़ा दादू नगरी के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर श्रद्धा के अच्छे परिवार हैं। पूज्यप्रवर ने स्थानीय जैन-अजैन सभी को मंगल पाथेय प्रदान करवाया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

पुण्यात्मा-शासनमाता

● **साध्वी मुक्तिश्री** ●

तेरापंथ की तरुण-तरुणिमा, साध्वी समाज की बनी अरुणिमा।
सप्त-प्रमुखाओं के असीम गुणों से, निर्मित हुई तव एक प्रतिमा।।

चैतन्य-रश्मि में जब पढ़ती हूँ आपका जीवन, भीतर में होता अजीव प्रकंपन।
सोचता है मन, कैसे हुआ धरती पर, दिव्य-शक्ति का अवतरण।।

हे! शासनमाता, तेरे उपकारों की गाथा मैं कैसे गाऊँ?
तेरी महिमा गाने को मैं शब्द कहाँ से लाऊँ।।

प्रशस्त करना मेरी राह, बन पाऊँ मैं तव परछाई।
सम-शम-श्रम की त्रिवेणी से, कर पाऊँ मैं खरी कमाई।।

सतिशेखरे! की जागरूकता का हो मुझमें वास।
उच्च-कोटि की विनम्रता का हो तनिक आभास।।

असाधारण साध्वीप्रमुखा की, सहिष्णुता का जगे मन में विश्वास।
ममतामयी माँ के समर्पण-भाव का हमें हो महज अहसास।।

हे! शासनमाता, भर देना मुझमें ऐसी शक्ति,
कर पाऊँ हर-पल तव निर्मल भक्ति।
आ जाए तुझ सी अनुरक्ति,
मिल जाए कुछ भव में मुक्ति।
अंत में पुण्यात्मा को नमन-नमन-नमन।।

हे सतीशेखरे!

● **साध्वी महकप्रभा** ●

हे सतीशेखरे! अजब गजब इतिहास रचायो सा।
चाल्या म्हाने छोड़ मनड़ो सगला रो ही उचटायो सा।
ओ दिवलो क्यों आयो सा।।

पहला ही याम में गुरु तुलसी युग में प्रमुखा बणग्या सा।
गुरुवर महाश्रमण री किरपा स्यूं कारज सारा सरग्या सा।
गण रो सुयश बढ़ायो सा।।

छोटा-मोटा सतियाँ सगला मानै थांरो उपकार घणो।
कोमल हियड़ै दो नयणां सूं बणां लिया सबने अपणो।
ममता रो दरियो बहायो सा।।

आई स्वर्ण जयंती गुरुवर सतरंगो दृश्य दिखायो सा।
चंदेरी में थांने शासनमाता रो ताज दिरायो सा।
आनंद घन रम बरसायो सा।।

फागुण सुद चौदस में अंतिम सांसो लियो गुरुवर चरणां।
हे मातृहृदये! वर दो म्हैं भी थारी ही छाँव बणां।
अमोल 'कनक' कहायो सा।।

लय : ए जी हां सा म्हारे---

माँ तेरा वास

● **साध्वी स्मितप्रभा** ●

फूलों की मृदु सौरभ जैसा, मुझमें हो माँ तेरा वास।
मन मंदिर में तेरी मूरत, शीघ्र हरो अब मेरी प्यास।।

रवि की स्वर्णिम आभा सम तुम, भरो शक्तियाँ मेरे भीतर।
हो विकास ऐसा ऊर्जा का, आगे बढ़ती रहूँ निरंतर।
मुरझाई यह कोमल कलिका, भर दो जीने का उल्लास।।

भरती थी संस्कार सलौने, जीवन बनता गंगा नीर।
ऋजुता-मृदुता, वत्सलता, उज्ज्वलता की थी तुम तस्वीर।
उपशम की मैं करूँ साधना, अंतर में कर दो प्रकाश।।

तेरी पावन सुरभि से, सुरभित हो मेरा व्यवहार।
स्मृतियों से आप्लावित कण-कण, महक उठा सारा संसार।
प्रगति शिखर पर बढ़ती जाऊँ, ऐसा मुझको दो आकाश।।

✦ *यदि व्यक्ति राग से विराग की ओर, भोग से योग की ओर, मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर तथा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर प्रयाण करे तो उसका जीवन सुखमय बन सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *प्रेक्षाध्यान व्यक्ति में भावात्मक परिवर्तन घटित करने का उपक्रम है। इस दृष्टि से यह अणुव्रत का एक सहायक प्रकल्प कहा जा सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

श्रीउत्सव का आयोजन

उधना।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा नारी स्वावलंबन की दिशा में बढ़ते कदम श्रीउत्सव का आयोजन किया गया। अभातेममं महामंत्री मधु देरासरिया द्वारा नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर रीबन खोलकर श्रीउत्सव का उद्घाटन किया गया।

महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण हुआ। मंडल अध्यक्ष जसू बाफना ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष पारसमल बाफना, परिषद अध्यक्ष मनीष दक, राष्ट्रीय सरगम प्रभारी सुनील चंडालिया सभी ने महिला मंडल को शुभकामनाएँ दी।

सहमंत्री निधि सेखानी ने श्रीउत्सव के बारे में बताया। महिला मंडल की स्टॉल का अवलोकन किया। अभातेममं कार्यसमिति सदस्य गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना, जयंती सिंघी, सभा संरक्षक बसंती लाल नाहर, मंत्री जवरीमल दुगड़, एटीडीसी प्रभारी अर्पित नाहर, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा सभी की उपस्थिति रही।

संयोजिका उपाध्यक्ष सोनू बाफना, सुनिता कुकड़ा, अंजु संचेती, रेखा चपलोत सभी का श्रम रहा। कन्या मंडल, किशोर मंडल सभी का सहयोग मिला। कार्यक्रम का संचालन अंजु संचेती एवं आभार ज्ञापन रेखा चपलोत ने किया।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा शिल्पशाला के अंतर्गत 'शुभ लेश्या और सही रंग सीखें जीवन जीने का सही ढंग' का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका मंजु गेलड़ा द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा किया।

अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका सुप्रिया मेहता एवं ललिता बाफना का सहयोग रहा। कायक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया।

दिवस इन डिफेंस प्रोजेक्ट

बालोतरा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं के निर्देशन में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा दिवस इन डिफेंस प्रोजेक्ट का आगाज किया गया। मुख्य प्रशिक्षक आरएसएस निर्मल लुंकड़ ने बताया कि आज के समय में कन्याओं को आत्मरक्षा एवं स्वयं का बचाव आना चाहिए।

महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा उपस्थित थे। कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मेहता, प्रभारी श्वेता सालेचा व पूर्व संयोजिका विधि भंसाली तथा पूरी कन्या मंडल की टीम उपस्थित थी।

रूपांतरण शिल्पशाला

विजयनगर, बैंगलुरु।

तेरापंथ भवन में रूपांतरण शिल्पशाला कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यशाला प्रारंभ की गई। मंडल की वरिष्ठ उपाध्यक्ष महिमा पटावरी ने सामुहिक जप करवाया। मंडल की बहनों ने प्रेक्षा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम भंसाली ने सभी का स्वागत किया। कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया द्वारा विषय प्रस्तुति दी गई। प्रशिक्षक अरविंद मांडोत का परिचय प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा ने दिया। सीपीएम के राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला में प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका वीणा बैद ने विषय पर जानकारी दी। संचालन निवर्तमान अध्यक्ष, कार्यक्रम की संयोजिका कुसुम डांगी द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन मंडल की कार्यकर्ता मोनिका गांधी ने किया। कार्यशाला में सहमंत्री अंजु सेठिया एवं सुनीता भटेवरा सहित कार्यसमिति सरिता जैन का सहयोग रहा।

कन्या सुरक्षा स्तंभ का निर्माण एवं बेंच अनावरण

कांदिवली।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी निर्वाणश्री जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद की सन्निधि में कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत कांदिवली में कन्या सुरक्षा स्तंभ का निर्माण एवं अनावरण किया गया एवं बैंच की स्थापना की गई। साध्वी राकेश कुमारी जी एवं साध्वी निर्वाणश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। कांदिवली संयोजिका नीतू नाहटा ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी राकेश कुमारी जी, साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने अपना उद्बोधन दिया।

कन्या सुरक्षा स्तंभ का अनावरण नगरसेवक ठाकुर सागर सिंह एवं मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण द्वारा किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा मुंबई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद बोहरा, योगेश चौधरी, अभातेयुप से दिनेश सिंघवी, तेरापंथी सभा कांदिवली के अध्यक्ष जवरीमल नौलखा, मंत्री चांदमल कुमठ, तेयुप कांदिवली के उपाध्यक्ष योगेश कोठारी, मंत्री सौरभ दुधेड़िया की उपस्थिति रही।

अभातेममं राष्ट्रीय ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, महिला मंडल से मंत्री अलका मेहता सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत ३६ बेंचों का अनावरण किया गया।

कन्या सुरक्षा योजना की प्रभारी अनीता सियाल, मधु कोठारी एवं पिंकी सांखला का सहयोग रहा। स्तंभ के सौंदर्यकरण प्रियांशी हिरण द्वारा की गई। कांदिवली संयोजिका नीतू नाहटा ने आभार ज्ञापन किया।

कन्या सुरक्षा स्तंभ का अनावरण

वाशी।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा कन्या सुरक्षा स्तंभ का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी व सभी साध्वीवृंद ने कार्यक्रम स्थल पर पधारकर मंगलपाठ से सभी में ऊर्जा समाहित की। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगल गीत का संगान किया गया। वाशी की संयोजिका इंदु बड़ाला ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वगात किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आमदार गणेश नाइक, संजीव नाइक, प्रकाश मोरे, शिल्पा मोरे, मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण, मंत्री अल्का मेहता, अर्जुन सिंघी, विनोद जैन, अमृत खाटेड़ की उपस्थिति रही।

पूर्वाध्यक्ष प्रेमलता सिसोदिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजिका अनिता चपलोत ने किया।

भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस का आयोजन

छापर।

तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी के सान्निध्य में भिक्षु साधना केंद्र में भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस वर्षीतप प्रारंभ करने के अवसर पर मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि भगवान ऋषभ का जन्म तीसरे आरे में हुआ था। और दीक्षा लेने के साथ ४००० व्यक्तियों ने दीक्षा एक साथ ली थी वह युग भौगोलिक जीवन अस्त-शस्त्र लंबा परिवान नहीं था, राजा प्रजा की कोई व्यवस्था नहीं थी, समाज भी नहीं था, गाँव-कस्बे व शहर नहीं थे। तीन धारा भगवान ऋषभ का जन्म दिवस, दीक्षा दिवस हुआ था। जहाँ जैन/बौद्ध वैदिक संस्कृति थी, जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है, भगवान महावीर के बाद जिन भद्र जी श्रवण जी प्रारंभ में उसका नाम श्रवण धर्म संघ था व आर्हत धर्म हुआ, निग्रंथ धर्म कहा जाता था महात्मा बुद्ध महावीर के समकालीन थे स्वार्थ को नहीं परमार्थ की भी भावना उजागर की और प्रवृत्ति के स्थान पर निवृत्तिकारज का पथ दिखलाया, मुनिश्री ने भोग के स्थान पर त्याग की बात कही।

नव वर्ष : नवोत्कर्ष

मुंबई।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में गुड़ी पाडवा एवं नव वर्ष का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि नव वर्ष नए अरमानों, नए संकल्पों, नव उमंगों के साथ शुरू हो। आज एक लक्ष्य बनाकर हमेशा उसी ओर गतिशील रहते हुए एवं दृढ़-संकल्प के साथ उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। अपने स्वरचित गीत का सामुहिक संगान किया। चेम्बूर महिला मंडल ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की, जिसमें नव वर्ष पर कैसा संकल्प सजाएँ और कैसे मनाएँ इसकी प्रस्तुति हुई।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा—चैत्र मास में शरीर में नए रक्त का स्वतः संचरण होता है, आज नव वर्ष पर रक्त परिवर्तन के साथ-साथ मानसिक एवं भावनात्मक रूप में नई ऊर्जा का ऊर्ध्वारोहण करें। कार्यक्रम में नवाह्निक अनुष्ठान का प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा, मुंबई के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ एवं स्थानीय सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही। वृहद् मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा के आयोजन

अमूल्य निधि थी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

नोखा।

तेरापंथ धर्मसंघ की महान, विरल विभूति, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का ८१ वर्ष की अवस्था में महाप्रयाण हो गया। उनकी स्मृति सभा तेरापंथ भवन, नोखा में मुनि डॉ० अमृत कुमार जी एवं शासनगौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में आयोजित की गई।

साध्वी राजीमती जी ने प्रमुखाश्रीजी को विलक्षण एवं सिद्धिप्राप्त अद्वितीय शासनमाता वात्सल्य की प्रतिमूर्ति सेवा भावना से ओत-प्रोत महानत्तम लेखिका बताया। साध्वी ललितकला जी, साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी समृद्धिप्रभाजी, साध्वी योगप्रभाजी, साध्वी कुसुमप्रभाजी, साध्वी पल्लवप्रभाजी, साध्वी प्रभातप्रभाजी, साध्वी समताश्री जी ने महाश्रमणी कनकप्रभाजी के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए अपने जीवन के संस्मरण सुनाए।

मुनि डॉ० अमृत कुमार जी, मुनि निकुंज कुमार जी, मुनि उपसम जी, मुनि मार्दव कुमार जी ने महाश्रमणी कनकप्रभाजी को अमूल्य निधि एवं संयम, साधना, सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति परिश्रमी कालजयी व्यक्तित्व बताया।

विधायक बिहारीलाल ने कहा कि शासनमाता सबकी माँ ममता की मूरत थी। साध्वीप्रमुखाश्री जी को श्रद्धा समर्पित की। नगरपालिका अध्यक्ष नारायण झंवर ने तेरापंथ मर्यादा अनुशासन का महा धर्मसंघ बताया। साध्वीप्रमुखा के प्रति श्रद्धा भाव रखे।

शासनसेवी डॉ० प्रेमसुख मरोठी, डॉ० धीरज मरोठी, उपाध्यक्ष निर्मल भूरा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवाणी, मंत्री इंद्रचंद बैद, डॉ० महेंद्र संचेती, जैन सोसायटी अध्यक्ष शिखरचंद पींचा, समाजसेवी राजेंद्र सिंह राठौड़, गोपाल लूणावत, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू बैद, कन्या मंडल संयोजिका पूजा लोढ़ा, उपासक अनुराग बैद, सुनील बैद आदि वक्ताओं ने सध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के प्रति श्रद्धासिक्त भाव, संस्मरण, विचार रखे। संचालन सभा के महामंत्री सुनील बैद ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री की स्मृति सभा का आयोजन

पर्वत पाटिया।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन साध्वी सम्यक्प्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। स्मृति सभा का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण खुशबू पींचा ने किया।

साध्वी सौम्यप्रभाजी ने गीतिका द्वारा अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुख्य उद्बोधन में साध्वी सम्यक्प्रभाजी ने कहा कि शासनमाता साध्वीप्रमुखाजी ने साध्वी समाज के विकास एवं नारी उत्थान के लिए जो कार्य किए वो उल्लेखनीय हैं। अंतिम समय में उनकी प्रबल इच्छा थी वो गुरुकुलवास में रहें और उनकी यह इच्छा सफल हुई।

स्थानीय सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, महिला मंडल, अध्यक्षा ललिता पारेख, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया, महासभा संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया, उपसभाओं के राष्ट्रीय संयोजक लक्ष्मीलाल बाफना, अक्षय तृतीया महोत्सव सूरत के महामंत्री नानालाल राठौड़, महासभा गुजरात प्रभारी फूलचंद छत्रावत, उधना सभाध्यक्ष पारस बाफना, चलथान सभामंत्री सुरेश पितलिया, महिला मंडल, उधना अध्यक्ष जसु बाफना, मनोज गंग, महिमा चोरड़िया, अर्जुन मेड़तवाल, तेजमल नोलखा आदि ने अपने वक्तव्य, मुक्तक, गीतिकाओं के द्वारा शासनमाता को श्रद्धांजलि दी।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी मलयप्रभाजी ने किया। साध्वी वर्धमानयशाजी द्वारा शासनमाता की स्मृति में लोगस्स का ध्यान करवाया। आभार ज्ञापन सभा सहमंत्री अनिल चौधरी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा का आयोजन

शिवाकासी।

तेरापंथ सभा एवं महिला मंडल के तत्त्वावधान में साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। सामुहिक जाप के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

महिला मंडल अध्यक्षा सुशीला सेठिया, मंत्री कुसुम बैद, सहमंत्री दिव्या आंचलिया ने भावांजलि अर्पित की।

साध्वी सन्मतिप्रभाजी ने अपने जीवन में साध्वीप्रमुखा के योगदान के बारे में बताया। साध्वी प्रबोधयशाजी एवं साध्वी अनुप्रेक्षाजी ने गीतिका द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

वरिष्ठ श्राविका संपतदेवी डागा ने स्वरचित कविता द्वारा भाव व्यक्त किए। सभा के वरिष्ठ श्रावक नोरतनमल डागा ने अपने भाव संस्मरण रूप में प्रस्तुत किए।

महिला मंडल की बहनों ने एक मधुर गीत द्वारा अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की। साध्वीश्रीजी के मंगलपाठ के साथ स्मृति सभा का समापन किया गया।

शासनमाता की स्मृति सभा का आयोजन

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन, जीन्द में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ सभा द्वारा किया गया। जीन्द कन्या मंडल संयोजिका प्रेक्षा जैन ने कविता के माध्यम से शुभारंभ किया।

नरेश जैन, तेयुप के संरक्षक राजेश जैन, टीपीएफ के आधार स्तंभ डॉ० सुरेश जैन, श्रीचंद जैन, मास्टर राजकिशन जैन, राजन जैन, ईश्वर जैन, तेरापंथ सभा, जीन्द के मंत्री मास्टर नारायण सिंह रोहिल्या, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष उपासिका कांता मित्तल, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष खजांचीलाल जैन आदि ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति भावनाएँ व्यक्त की तथा अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया। स्मृति सभा का समापन दो लोगस्स के ध्यान से हुआ।

✦ *मार्ग की संपूर्ण जानकारी हो तथा व्यक्ति सम्यक् दिशा में चले तो वह अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

चेन्नई।

मादावरम चेन्नई प्रवासी मंजुलादेवी-रीखबचंद चौपड़ा मूथा की सुपुत्री पूजा की शादी बगड़ी निवासी, मादावरम, चेन्नई प्रवासी सुनीता देवी-गौतमचंद चंडालिया के सुपुत्र मनीष कुमार के साथ जैन संस्कार विधि से हुई।

अभातेयुप जैन संस्कारक पदमचंद आंचलिया एवं अभातेयुप जैन संस्कारक स्वरूपचंद दांती ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक स्मरण के साथ विवाह संपन्न करवाया। परिजनों ने संस्कारकों को साधुवाद दिया।

पाणिग्रहण संस्कार

बालोतरा।

धनराज श्रीश्रीमाल के सुपुत्र तनसुख एवं छगनलाल मूथा की सुपुत्री सुमित्रा भंसाली का विवाह पारिवारिकजनों की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप संस्कारक पुष्पराज कोठारी, शिवकुमार ढेलड़िया एवं निलेश सालेचा ने जैन संस्कार विधि द्वारा विवाह संस्कार संपन्न करवाया।

तेयुप, बालोतरा के अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल द्वारा परिवारजनों का आभार ज्ञापन किया। संस्कारकों और तेयुप अध्यक्ष-मंत्री की ओर से परिवारजन को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

एटीडीसी कलेक्शन सेंटर का शुभारंभ

जयपुर।

तेयुप के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के द्वारा जैन संस्कार विधि से प्रथम कलेक्शन सेंटर का शुभारंभ मांगीलाल-निर्मला देवी सिंघी के सुपुत्र डॉ० सिद्धार्थ सिंघी-डॉ० पूनम सिंघी की क्लीनिक अजमेर रोड, जयपुर में ट्रस्ट के चेयरमैन राजेश छाजेड़ व संस्थापक संरक्षक न्यासी बच्छावत की उपस्थिति में संस्कारक सुरेंद्र सेठिया व श्रेयांस बैंगानी ने पूरे विधि-विधान व मंत्रोच्चार के संपन्न करवाया।

परिषद के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि ट्रस्ट के नवमनोनीत न्यासी डॉ० सिद्धार्थ सिंघी ने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की जाँच के माध्यम से पधारने वाले पेसेंट के लिए निःशुल्क परामर्श देने की घोषणा कर जन-सामान्य को लाभान्विति किया।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं अनेक विशिष्टजन उपस्थित थे।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

जयपुर।

चद्रकला-छत्रसिंह बोथरा के सुपुत्र प्रीति-तरुण बोथरा के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतम बरड़िया ने पूरे विधि-विधान से मंगलमय वातावरण में संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप कार्यसमिति सदस्य सुमित खाटेड़ ने परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

विवाह संस्कार

जयपुर।

जुगराज सिंघी के सुपुत्र रितेश कुमार सिंघी का विवाह संस्कार मदनलाल खत्री की सुपुत्री मेधा के साथ संस्कारक राजेश जैन व संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में जैन संस्कार विधि के संयोजक बिनीत सुराणा, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद की उपस्थिति में मंगलभावना पत्रक दोनों परिवारों को भेंट किया।

✦ *जिस संगठन में पारस्परिक व्यवहार मृदुता व हितैषितापूर्ण होता है, वह दीर्घजीवी बन जाता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

शासनमाता श्रद्धाअर्पण

● **साध्वी जिनबाला** ●

जीवनदात्री, स्नेहप्रदात्री, शासनमाता श्रद्धाअर्पण।
ऊर्जादात्री, नव निर्मात्री, भावभरा सर्वस्व समर्पण।।

तुलसी गुरुवर, करकमलों से,
शिक्षित, दीक्षित और परीक्षित।
भैक्षव शासन साध्वीप्रमुखा,
पद से प्रभु ने किया विभूषित।
एक-एक के दिल को जीता,
श्रमणी गण की तुम थी धड़कन।।

अद्भुत अनुपम पुण्य शालिनी,
किन शब्दों में गौरव गाऊँ।
त्रय आचार्यों की पाई जो,
कृपा अनूठी बता न पाऊँ।
स्थान बनाया जैसा तुमने,
मिल न सकेगा और उदाहरण।।

चंदेरी की शुभ्र चांदणी,
करुणा की अमृत निर्झरणी।
सम, शम, श्रम की मंदाकिनी हो,
तरणी और सदा तारिणी।
समता स्रोतस्विनी की पाई,
भाग्योदय से चरण-शरण।।

ममतामयी अमृतहृदय तुम,
पलक झपकते छोड़ गई हो।
वर्षों से जो जुड़ा हुआ था,
नाता पल में तोड़ गई हो।
सदा दिलों में अमर रहेगा,
पाया जो अमृतमय सिंचन।।

जीवनदात्री, स्नेह प्रदात्री,
शासनमाता श्रद्धा अर्पण।।
ऊर्जादात्री, नव निर्मात्री,
भाव भरा सर्वस्व समर्पण।।

अर्हम्

● **साध्वी सूरज कुमारी** ●

हुआ और होसी घणा,
साध्वी प्रमुखा पूज।
पिण शासनमाता जिस्या,
हुवे न कोई दूज।।

खूब बढ़ायो संघ रो,
मान और सम्मान।
साध-सत्यां रे हृदय में,
जम्यों है थांरो स्थान।।

'सूरज कुमारी' निज जपे,
माताजी रो नाम।
गण-गणपति रे जोग स्यूं,
पाऊँ मुगती धाम।।

दरस दिरावो जी

● **साध्वी अनुशासनश्री** ●

तुलसी युग तरुणिम आभा, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा।
भक्ता री विनती पर गोर करावो, शासनमाता जी,
पधरावो म्हारा माताजी, याद घणां आवो जी,
दरस दिरावो जी।।

आँख मूँद जद म्है ध्यावां, हिवडै में मूरत पावां।
वत्सलता री खाली गगरी, भरवावो महाश्रमणी जी।।

साँसां री सरगम बोलो, सातूं सुर इत उत डोले।
निष्प्राणां में प्राणं रो संचार करावो महाश्रमणी।।

हाथां में जद कमल धरां, कॉपी में लिखणै उतारां।
वरदहस्त स्यूं आशीर्वर बरसाओ म्हारा महाश्रमणी।।

चरणां ने गतिमान करां, लक्षित मंजिल वरण करां।
पकड़ आंगुली ऊर्जा संप्रेषित करवावो महाश्रमणी।।

नंदनवन री फुलवारी मुरझाई हर इक क्यारी।
गण क्यारी में शक्ति स्रोत बहावो महाश्रमणी जी।।

लय : कल्पतरु रा बीज---

छोड़ गई क्यों शासनमाता?

● **साध्वी कर्णिकाश्री** ●

छोड़ गई क्यों शासनमाता? तेरी याद हमें आए।
एक बार तो दर्शन दे दो, यही भावना हम भाएँ।।

अनमोल मणि तुम गण-सागर की, खूब बढ़ाया गण भंडार।
चलती रहती कलम तुम्हारी, अद्भुत तव रचना संसार।
सरस्वती की वरद-सुता का, हर पल सब गौरव गाए।।

कला, कनक, साध्वीप्रमुखा बन, गण का मान बढ़ाया था।
तुलसी विभू की अनुपम कृति ने नव इतिहास रचाया था।
स्वर्णिम ख्यात बनाने वाली, माँ की बलिहारी जाए।।

तुलसी महाप्रज्ञ के युग में काम किया तुमने जमकर।
महाश्रमण गुरुवर सन्निधि में, बहता था सुख का निर्झर।
त्रय-गुरुओं की दृष्टिराधिके! तेरी महिमा हम गाएँ।।

शासनमाता के चरणों में, श्रद्धाफूल चढ़ाएँ हम।
नाम करेंगे गण का ऊँचा, यह सौगात सजाएँ हम।
धरणी-अम्बर में माँ तेरा, जयनारा हम गूँजाएँ।।

लय : कलियुग बैठा मार---

हर पल याद सताए

● **साध्वी समत्वयशा** ●

शासनमाता संघ-क्षितिज पर आज,
गूंजित तव अभिधान।
तेरी वत्सलता को पाने तड़फ रहे ये प्राण।
दर्शन का दो दान, फल जाए अरमान।।

धरती अम्बर लगता सूना, सूनी लगती हवाएँ।
एक बार आ दर्शन दे दो, सबका मन मुस्काए।
मुरझी-मुरझी इन कलियों में आकर भर दो जान।।

संघ निदेशिका, महाश्रमणीवर, किसको आज कहे हम।
असाधारण साध्वीप्रमुखा, तेरे ध्यान धरें हम।
शासनमाता शासन की तुम, यह प्रभु का फरमान।।

काम अधूरे अब भी तेरे, कुछ तो गौर कराते।
योगक्षेम अहिंसा यात्रा, उनको पूरा कराते।
इतनी जल्दी कर तैयारी, क्यों किया तूने प्रस्थान।।

स्मृतियाँ तेरी रह-रह आए, हरपल याद सताए।
सतिशेखरे! संघ समूचा, तुमको आज बुलाए।
भावांजलि अर्पित चरणों में, गाऊँ तव गुणगान।।

लय : ओ कान्हा अब---

जाऊँ मैं बलिहारी

● **साध्वी समप्रभा** ●

जाऊँ मैं बलिहारी।
शासनमाता ने समभावों से, जीवन नैया तारी।।

छोटां सूरज की लाल लाड़ली, कला बनी विख्यात।
श्रेष्ठ साध्वीप्रमुखा बनकर, खूब गढ़ी थी ख्यात।
कनकप्रभा कनकवत निर्मल, लगती मन को प्यारी।।

सहज, सरल और सौम्य स्वभावी, ऋजुता, मृदुता भारी।
हँसता-खिलता चेहरा तेरा, मूरत थी मनहारी।
घोर वेदना तन में तो भी, अद्भुत समता धारी।।

दुनिया में थी विशिष्ट विभूति, कनकप्रभा प्रख्यात।
साहित्य संपादन में कुशल, जो तेरापंथ की ख्यात।
आठ-आठ साध्वीप्रमुखाओं में सबसे थी न्यारी।।

तीन-तीन आचार्यों की, मंजूषा को तुमने पाया।
तुलसी गुरुवर की कृति पर, हर पल रहती सुख साया।
महाश्रमण उपवन की हँसती खिलती फुलवारी।।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन

रायसिंहनगर।

तेरापंथ धर्मसंघ की शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सभाध्यक्ष धर्मचंद बांठिया, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा, तेयुप अध्यक्ष मुकेश जैन, अभातेयुप पूर्व कोषाध्यक्ष प्रदीप बोथरा एवं सुमित जैन आदि वक्ताओं ने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त किए। अपने विचारों के माध्यम से भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप बोथरा ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार एवं काव्यांजलि

शासनमाता में होते मातृत्व के दर्शन

● **मुनि प्रशांत कुमार** ●

शासनमाता महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने संथारे की अवस्था में समाधिमरण को प्राप्त कर अपने लक्ष्य की ओर प्रस्थान किया हैं उनके चले जाने से तेरापंथ धर्मसंघ उनका अभाव अनुभव कर रहा है। एक ऐसा महान व्यक्तित्व हम सबके बीच से अदृश्य हो गया, जो लाखों लोगों के लिए श्रद्धेय था, वंदनीय था, अभिनंदनीय था।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यक्तित्व निर्माण का गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के मार्गदर्शन में हुआ। गुरुदेव श्री तुलसी ने ही उन्हें साध्वीप्रमुखा के पद पर पदासीन किया। उन्हें साध्वी समुदाय की अंतरंग देखभाल का बहुत बड़ा दायित्व सौंपा।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने गुरुदेव के इंगित के अनुसार अपने दायित्व का निर्वाहन तो किया ही, अपने कुशल व्यवहार और नेतृत्व क्षमता से साध्वी समाज का दिल भी जीत लिया।

वे बहुत व्यवहार कुशल और विनम्र थी। साध्वियों के साथ-साथ सभी संत जन भी उनके व्यवहार से प्रसन्न थे। मैंने देखा, छोटे-बड़े सभी संत उनका बहुत सम्मान करते थे। आचार्यों के प्रति तो वे पूर्णतया समर्पित रहती थी। गुरुदेव का जो भी इंगित हो जाता, वे अक्षरशः उसको क्रियान्वित करती। गुरु के प्रति समर्पण भाव तो उनमें था ही, साथ-साथ पुरुषार्थ भी उन्होंने खूब किया, जिससे उनका व्यक्तित्व बहुआयामी होकर निखरता चला गया।

गुरुदेव श्री तुलसी के साहित्य का संपादन, यात्रा साहित्य का लेखन उन्होंने बखूबी किया। 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' साहित्य को आपने सुव्यवस्थित और सुंदर रूप देकर जनता के सामने प्रस्तुत किया। आप एक साहित्य प्रचेता व्यक्तित्व थे। साध्वी समुदाय में भी आपने साहित्यिक चेतना को जागृत किया। आपका कविता साहित्य बहुत मार्मिक और प्रेरणादायक है। तीनों ही आचार्यों के जन्मदिवस, पट्टोत्सव आदि विभिन्न अवसरों पर नई कविता की रचना कर आप प्रस्तुत किया करती थी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपनी अद्भुत नेतृत्व क्षमता का परिचय संघ को दिया। एक ओर जहाँ समाज में संयुक्त परिवारों की व्यवस्था प्रायः खत्म हो चुकी है। घरों में दो या तीन बहुएँ साथ में नहीं रह पातीं, ऐसे समय में ५०० से अधिक साध्वियों का नेतृत्व करना, एक डोर में बाँधे रखना कोई सहज बात नहीं है। मर्यादा महोत्सव आदि के अवसर पर अवसरों पर अनेक बार ३००-४०० साध्वियाँ आपकी सन्निधि में एक साथ रहती रही है। उन सभी साध्वियों को अपने कुशल व्यवहार से एक साथ रखते हुए संतुष्ट और प्रसन्न रखना आपकी विशिष्ट नेतृत्व क्षमता का ही कमाल है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यक्तित्व की अनेकानेक विशेषताओं का सम्मान करते हुए ही संघ के आचार्यों ने उन्हें महाश्रमणी, संघ महानिदेशिका, फिर असाधारण साध्वीप्रमुखा और फिर शासनमाता जैसे विशिष्ट संबोधन प्रदान किए।

शासनमाता साध्वीप्रमुखा के व्यक्तित्व में हर किसी को मातृत्व के दर्शन होते थे। वे एक नजर भर देख लेती तो सभी को ऐसा अहसास होता कि माँ का आशीर्वाद मिल गया है।

ऐसी शासनमाता की आत्मा को शतशः नमन।

✦ *जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

दर्शन के लिए मन प्यासा

● **साध्वी प्रांशुप्रभा** ●

मां की ममता को पाकर के, हम निहाल हो गए।
जो तुमने हमें दिया, हम खुशहाल हो गए।
जाकर के भी हमें, संयम में साझ देना हे मां।
तुम्हारे पावन संदेश, जग के नाम हो गए।

मां तुम बच्चों की आशा, दर्शन के लिए मन प्यासा
जल्दी अपने पास बुला लो, दिव्य रूप से आ संभालो।।

तुमसे पाया संस्कारों का अमृत सिंचन।
तुमसे ही करवाया प्रथम केश लुंचन।
तुम्हारी शिक्षाएं हर पल याद आयेगी।
तुम्हारे जैसे बन जाये हम भी कंचन।

तुम्हारे जैसी आ जाये, मुझमें आचार कुशलता।
तुम्हारे जैसी अपनाऊं व्यवहार कुशलता।
तुम मुझमें भरती रहो संस्कार कुशलता।
तुम हर पल बरसाती रहो स्नेह वत्सलता।

ममता की मूरत हो तुम।
समता की सूरत हो तुम।
अनावेश की प्रेरणा हो तुम।
अनासक्ति की चेतना हो तुम।।

शासनमाता री गौरव गाथा

● **साध्वी स्वस्थप्रभा** ●

शासनमाता री गौरव गाथा जन-जन गावै है।
ममता समता क्षमता री स्मृतियाँ सरसावै है।।अ।।

सन् १९४१ श्रावण तेरस शुभ जनम लियो।
राजधानी बंगाल देश री कोलकाता नै धन्य कियो।
सूरजमल जी छोटी बाई पितुमाता कहावै है।।
शासनमाता----

प्रतिभा पौरुष स्यूं शिक्षा में सब स्यूं ऊँचो स्थान वर्‌यो।
फला नाम नै सार्थक करणै संयमपथ स्वीकार कर्‌यो।
अप्रमत्तता साधक रो जीवन चमकावै है।।
शासनमाता----

गुरु तुलसी निज कृति नै संघ भाल पर सामैल्यया हा।
धीर और गंभीर संघ मणी सगला रै मन भाया हा।
रत्नाधिक अवरम सतियाँ अहो भाग्य सरानै है।।
शासनमाता----

ब्रह्ममुहूर्त में मंडली रै संग करवाता स्वाध्याय सदा।
जिज्ञासा पर अर्थ वाचना आप दिराता सटीक तदा।
जीवनशैली प्रेरक मुक्ति पथ प्रकटावै है।।
शासनमाता----

संघ महानिदेशिका पद श्रीगुरु तुलसी बगसायो है।
माता महाप्रज्ञ प्रभु करुणा इमरत रस बरसायो है।
महाश्रमण स्यूं अंतिम क्षण अनशन वर पावै है।
शासनमाता----

परम समाधि स्वस्थप्रभा नै देती बामूरत प्यारी।
मासिक पुण्यतिथि चवदस सुदयादां में सूरत थांरी।
करूँ समर्पित श्रद्धांजलियाँ मन मधुकर गावै है।।

लय : आ बाबासा री लाडली---

कोटिशः नमन

● **शासनश्री साध्वी कुंथुश्री** ●

शासनमाता महाश्रमणी जी के पादाम्बुज में कोटिशः नमन।
ममतामयी वात्सल्यमयी करुणामयी अर्पित आस्था वंदन।
सति शेखरे तेरी रहमत सभी पर बरसती रहती थी।
तेजोमय महाशक्ति को श्रद्धाप्रणत करते वंदन अभिवंदन।।

आपकी निर्मलता श्रमशीलता प्रबुद्धता सचमुच निराली थी।
प्रज्ञामयी ज्योतिर्मयी चेतना अभिभूत करने वाली थी।
सहजता सरलता अप्रमदता का ग्राफ इतना उन्नत था।
कि साधना आराधना उपासना सबको चकित करने वाली थी।।

तुम्हारा पवित्र जीवन मधुर मुस्कान से सदा बहार था।
दिवस हो चाहे रात्रि हर वक्त चमकता दीदार था।
क्या करिश्माई नूर भरा था स्नेहिल नयनों में।
तेरी निकट सन्निधि से उमड़ता समता का पारावार था।।

किसी को अपनी दौलत पर नाज होता है।
किसी को अपनी शोहरत पर नाज होता है।
हमें ऐसी असाधारण विलक्षण साध्वी प्रमुखाश्री जी मिले।
समस्त तेरापंथ धर्मसंघ को अपनी किस्मत पर नाज होता है।।

महाशक्ति को शत-शत वंदन

● **साध्वी कीर्तियशा** ●

महाप्रयाण-महाशक्ति का, महाशक्ति को शत-शत वंदन।
ज्योतिर्मय जीवन पृष्ठों से, पुलकित है गण-गगनांगण।।

सूरज-चाँद सितारों जैसा, तेजस्वी व्यक्तित्व तुम्हारा।
हिमगिरी की ऊँचाई से भी, ऊँचा है कर्तृत्व तुम्हारा।
नेतृत्व-निराला पाकर तेरा, महक रहा है गण का कण-कण।।
महाप्रयाण-महाशक्ति का, महाशक्ति को वंदन।।

अष्ट-सिद्धियाँ, नव-निधियाँ, तुम में, अष्ट-मंगल तुम हो साक्षात्।
गौरवशाली इतिहास तुम्हारा, पढ़कर प्रफुल्लित तेरा गात।
चैतन्य-रश्मि 'साध्वीप्रमुखा' का, शब्द-शब्द भरती नव-स्पंदन।।

मीत-तुम्हीं हो, गीत तुम्हीं हो, जीवन का संगीत तुम्हीं हो।
आस तुम्हीं हो, साँस तुम्हीं हो, जीवन का मधुमास तुम्हीं हो।
शासनमाता सन्निधि पाकर, मोद मनाती हर-पल हर-क्षण।।
महाप्रयाण-महाशक्ति का, महाशक्ति को वंदन।।

कदम-कदम पर कमल खिले, तेरे चरणों में महाशक्तिधर।
फैली यश की 'महावल्लरी' अर्द्ध सदी का था शुभ-अवसर।
पा स्नेहिल अनुशासन तेरा, हम तो बन गए आनंद-धन।।
महाप्रयाण-महाशक्ति का, महाशक्ति को वंदन।।

गुरु-चरणों में संघ समूचा, स्वर्ण-जयंति मनाने आया।
'शासनमाता' प्रभो! संबोधन दे, 'साध्वीप्रमुखा' मान बढ़ाया।
'स्वर्ग-लोक' से ऐसा वर दो, भर दो सबमें अभिनव पुलकन।।
महाप्रयाण-महाशक्ति का, महाशक्ति को वंदन।।

✦ *सेवा तब उच्चस्तरीय हो सकेगी, जब व्यापार के साथ नैतिकता जुड़ेगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

नहीं भूलेगा यह मन

● **साध्वी नम्रप्रभा** ●

शासनमाता महाश्रमणीजी, लगती थी मनभावन।
असाधारण साध्वीप्रमुखा, जीवन कितना पावन।।

आगम ज्ञानी सतिवर, प्रवचन कौशल निरूपम।
शैली अनुशासन की, मानी सबने अनुपम।
ममता की मूरत थी, समतामय था जीवन।।

कलाकार गुरु तुलसी ने, गण को उपहार दिया।
संघ की हर साध्वी पर, कितना उपकार किया।
है कालजयी व्यक्तित्व, सौभागी नंदनवन।।

पाथेय मिला जग को, वाणी थी कल्याणी।
बरगद की शीतल छाँव, चाहता था हर प्राणी।
हम कलिया गणवन की, सूना लगता उपवन।।

पलकों से मोती निकले, श्रद्धा की बहती धारा।
इंगित तेरा सबको, लगता कितना प्यारा।
तेरी यादों के गुलदस्ते, नहीं भूलेगा यह मन।।

लंबी यात्रा करके, प्रभु ने दिए दर्शन।
गुरु सेवा में बीते, जीवन के अतिम क्षण।
जीवन नैया पार करी, गुरु महाश्रमण चरणन्।।

लय : मेरा गीत अमर----

नूर तुम्हारा अनुपम

● **साध्वी करुणाप्रभा** ●

शासनमाता, याद है आता, नूर तुम्हारा वह अनुपम।
सारणा-वारणा श्रमणी-गण की करती रहती कदम-कदम।।

असाधारण, साध्वीप्रमुखा, शासन की शासनमाता।
संरक्षण में सिंचन पाकर मन आनंदित बन जाता।
पुरुषार्थी बन निज प्रतिभा से, महकाया था हर आलम।।

धन्य-धन्य तुलसी गुरुवर से पाया अभिनव अभिसिंचन।
अगम्य अलौकिक बनी धरोहर पाया जो अमृत पोषण।
गुरुदृष्टि आराधन करना, आठों याम बजे सरगम।।

तुलसी-महाप्रज्ञ युग में पाई शिखरों तक ऊँचाई।
नारी जाति की महिमा वो धरा-गगन में गुंजाई।
पौरुष का इतिहास निराला बोल रहा है अविरल श्रम।।

महातपस्वी महाश्रमण की, मर्जी तुम पर रही अनंत।
घोर वेदना में भी अंतर मन में खिलता रहा बसंत।
परम सौभागी को मिलती है ऐसी सन्निधि आखिर दम।।

ऐसी शासनमाता हमको कहाँ मिलेगी बतलाओ।
आँख दिखाने में भी ममता, राज हमें भी सिखलाओ।
शिक्षण का अनुसरण करेंगे है संकल्प यही दृढ़तम।।

नतमस्तक सारा संसार

● **साध्वी अमृतप्रभा** ●

तुलसी की कमनीय कृति, नव्य भव्य ग्रंथाकार।
गुणरत्नों से भरा समंदर, नतमस्तक सारा संसार।।

कलाकार की अभिनव छेनी, युगानुरूप दिया आकार।
करुणामृत का पाकर सिंचन, स्वप्न किए तुमने साकार।
जीवन का हर पृष्ठ सुनहला, निश्छलता का पारावार।।

आगम से अनुस्थूत तुम्हारा, कण-कण जीवन का व्यवहार।
संपादन लेखन काव्यामृत, जिन शासन को तेरा उपहार।
शब्दातीत कर्तृत्व तुम्हारा, सरस्वती रूप अनुहार।।

कामकुंभ बन भरती हरदम, ग्रंथकलश रस जन पीते।
अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा, टूटे हुए दिलों को सीते।
लाखों की वैशाखी बन किया, प्राणों में नूतन संचार।।

सराबोर पौरुष खुशबू से, मनमोहक जीवन महफिल।
मुस्काती मोहनी मुखमुद्रा, स्नेहामृत बरसाता दिल।
वत्सलता अनुप्राणित अनुशासना, पा झंकृत हृतंत्री के तार।।

अथ से इति गुरु चरणों में, साँस-साँस का था उपयोग।
अंतर्यामी शीघ्र पधारे, सुदीर्घ विहार का किया प्रयोग।
तृप्त प्राण पा दर्शन चरणों में, टूटा साँसों का इकतार।।

अपनेपन का सा व्यवहार

● **समणी जगतप्रज्ञा** ●

दिए जो महाश्रमणी संस्कार, याद रहेगा नित उपकार।
कैसी घड़ियाँ ये आई हैं, अब तो स्मृतियाँ दिल में समायी हैं।।

समता, समता क्षमता की मूरत लगती मनहारी।
निज हाथों से कितनों की तुमने तकदीर संवारी।
उजला-उजला सा आचार, अपनेपन का सा व्यवहार।।

जब-जब स्वास्थ्य प्रतिकूल बना, पाया माँ का संदेशा।
मिलता था पाथेय मार्गदर्शन जब हुई अपेक्षा।
मिला है तुमसे स्नेह अपार, कैसे जतलाएँ आभार।।

जीवनभर ममता बाँटी फिर क्यों निर्मोहीपन धारा।
पीर पराई पीकर तुमने सबका नित कारज सारा।
अप्रमत्तता की तस्वीर, परम पराक्रम की नजीर।।

लय : नीले घोड़े रा---

कमल सी कोमलता

● **समणी विनीतप्रज्ञा** ●

था निर्झर नीर सा उजला, उजला बाँटता जीवन।

सुशोभित सज्जित था तुमसे, सुपावन भिक्षु का शासन।
गुणाकर महाश्रमणी पाकर खिला था भाग हम सबका।
कला को कलाकार गुरुवर श्री तुलसी दृष्टि ने परखा।
बरसता था सदा सावन, सदा आनंद तव चरणन।।

कमल सी कोमलता मृदुता, और चट्टान सी दृढ़ता।
जो भी आता शरण तेरी लुटाती स्नेह वत्सलता।
थी संख्यातीत गुणराशि करूँ कैसे इसे वरणन।।

लय : तुम अगर साथ देने का---

महिमा थारी गावां

● **साध्वी सुलभयशा** ●

शासनमाता गण शान बढ़ाई हो,
म्है महिमा थारी गावां
जन-जन रे दिल में छाई हो
म्है महिमा---

चंदेरी री राज दुलारी
श्रमणी गण में छाप तुम्हारी
जागी हद पुण्याई हो।।

मुख मुद्रा थी बड़ी सुहानी
तुलसी गुरुवर कृति लुभानी
वचन सिद्धि वरदाई हो।।

तुलसी गुरु दृष्टि में चढ़गी
संघमणी महाश्रमणी मिलगी
सन्निधि थी सुखदाई हो।।

प्रमुख पद अर्धशदी तक पायो
सब प्रमुख में नाम कमायो
शासनमाता पदवी पाई हो।।

वात्सल्य पीठ दिल्ली में सुहायो
महाश्रमण गुरु मुख स्यूँ फरमायो
अंतिम समय गुरु सन्निधि सुखदाई हो।।

लय : बता मेरे यार सुदामा रे।

दुनिया गौरव गाती

● **साध्वी उज्ज्वलरेखा** ●

ममतामयी माँ तेरी, रह-रह यादें आती।
जब ध्यान धरूँ तेरा, नयने ये छलक जाती।।आ०।।

चरणों में जब आते, शुभ आशीर्वर पाते।
वात्सल्यामृत पाकर, अंतर घट भर जाते।
मृदु वचनों से सबके, दिल में तूं समा जाती।।

आचार निष्ठा गणनिष्ठा, गुरु निष्ठामय जीवन।
गुरुत्रय की सेवा का, पाया अवसर पावन।
अति विनय समर्पण से, आभा मंडित ख्याति।।

वक्तृत्व कला अनुपम, लेखन आगम संपादन।
स्वाध्याय मृदंग बजती, प्रतिपल तेरे चरणन्।
तत्त्वज्ञ महाज्ञानी, दुनिया गौरव गाती।।

प्रज्ञा जागृत क्षण-क्षण, आभामंडल उज्ज्वल।
सक्षम नेतृत्व तुम्हारा, देता सबको संबल।
सुयश सुरभि तेरी, चिहुंदिशियां महकाती।।

लय : गुरुदेव दया करके---

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

शासनमाता री पुण्याई

● **साध्वी राजीमती** ●

स्वामीजी रे संघ री थे शोभा घणी बढ़ाई।।हो।।
शोभा घणी बढ़ाई, दुनिया देख-देख चकराई।हो।।

चिंतन में भारी तरुणाई, निर्णय में गहराई।
लेखन संपादन संभाषण, वार्ता में सुघड़ाई।
कविता में होती जान जी, है बहुश्रुतता पहचान जी।
अनुशासन री कला अनोखी, कदम-कदम अरुणाई हो।।

तीन-तीन आचार्यां री थे, अभिनव सेवा साजी।
वर्ष पचास रह्या प्रमुखा पद, आखिर जीती बाजी।
ओ करे संघ सम्मान जी, थे घणो कर्‌यो बलिदान जी।
आभारी रहसी ओ शासन, सुयश ध्वजा फहराई हो।।

साठी रे कुएं रो पाणी, मन हो गहरो-गहरो।
तीनूं योगां पर थे रखता, पल-पल पूरो पहरो।
दृढ़ श्रद्धा रो आधार जी, हो निर्मलतम आचार जी।
महाश्रमणी जी थांरी यादां, जासी कियां भुलाई हो।।

शासनमाता री पुण्याई, जागी और जगाई।
करमां स्यूं लड़णै री विद्या, म्हांने खूब सिखाई।
समता रो करता पान जी, गुरुभक्ति में गलतान जी।
गुरु महाश्रमणजी अपणै हाथां, नैया पार लगाई हो।।

लय : स्वामीजी थांरी साधना री---

शासनमाता तेरी वो छाया

● **साध्वी कुसुमप्रभा** ●

शासनमाता तेरी वो छाया।
कैसे उसको जाएँ भुलाया?

विनम्रता, समर्पण हमें सिखाया,
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया।
संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा क्या है?
इसका विराट रूप दिखलाया।।

कामधेनू तुम इस शासन की,
मनवांछित वरदान थी देती।
निरख-परख कर सबकी क्षमता,
सबको विकास पंथ बतलाया।।

आँखों में है तेरी मूरत,
सोते-जागते बस तेरी सूरत।
तुम थी घट-घट की ज्ञाता,
फिर क्यों हमको यूँ बिसराया।।

जो भी माँगा वो तत्काल पाया,
कल्पवृक्ष सा रूप लुभाया।
पर माँ! मन में है प्रश्न भारी,
क्यों दर्शन में अवरोध आया।।

वंदे शासनं - वंदे सतिवरं

● **साध्वी रतिप्रभा** ●

युगों युगों तक शासनमाता की गरिमा जग गाएगा।
तुलसी की इस अभिनव कृति को, श्रद्धाशीश झुकाएगा।
वंदे सतिवरं वंदे सतिवरं।।

विनय समर्पण के द्वारा, तुमने गुरुवर का दिल जीता।
गुरु की छत्रछाँह में तेरा, जीवन मधुवन है बीता।
तुम बिना आज लग रहा हमको, यह शासन जैसे रीता।
दुर्लभ ऐसी शासनमाता, सबका हृदय रुलाएगा।
वंदे सतिवरं।।

तुलसी महाप्रज्ञ महाश्रमण की महर नजर पाई।
इस भैक्षवशासन में तुमने पाई कितनी ऊँचाई।
कच्ची कोंपल वटवृक्ष सी अभिनव दिव्यता दिखलाई।
तेरी अद्‌भुत गुरुभक्ति पर, जग यह गौरव गाएगा।
वंदे शासनं।।

श्रम की ले मशाल तुमने, नंदनवन का भंडार भरा।
तेरी पावन सन्निधि पाकर, कितनों का जीवन निखरा।
अप्रमत्त चेतना ने इस गण को किया है हरा-भरा।
तेरे गुण सुमनों की सौरभ पा, जीवन विकसाएगा।
वंदे सतिवरं।।

है आदर्श जीवन तुम्हारा, किन वर्णों में बतलाएं।
आध्यात्मिक ज्योति को पाकर ज्योतिर्मय हम बन जाएं।
ब्रह्म मुहूर्त की अभिनव बेला को, कैसे हम विसराएं।
पावन ज्ञानामृत की धारा, पा जीवन सरसाएगा।
वंदे शासनं।।

लय : वंदे शासनं आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं---

हर पंछी का आश्वासन

● **साध्वी संयमलता** ●

बासंती उत्सव ने पतझड़ का क्यों अहसास दिलाया है।
हर पल जिसने दी शीतल छाया, क्यों पल में तरु मुरझाया है।।

सर्दी-गर्मी-वर्षा में था जो हर पंछी का सुदृढ़ आश्वासन।
आज लगता है सुना-सुना जहाँ और सुना मन का हर कानन।
अनचाहा क्यों कालदिवस बन होली का दिन आया है।।

निज श्रमबूंदों से जिसने गण के हर पौधे को सींचा है।
ना भेद था छोटे-बड़े का तब ही खिल रहा संघ बगीचा है।
समता ममता वत्सलता ने हर पुष्प को सहलाया है।।

तीन-तीन गुरुओं की सेवा शासनमाता एक उदाहरण है।
गणभक्ति गुरुभक्ति समर्पण शासन माँ का विलक्षण है।
गुणरत्नों की आकर माँ के गुणों का पार न पाया है।।

व्यक्तित्व विराट था मैया कभी ना वाणी का विषय बना पाये।
ऊर्जस्वल आभा नेतृत्व कौशल युग-युग भूला ना जाये।
शासनमाता पद ने गण का गौरव शिखरों चढ़ाया है।।

लय : चाँद सी महबूबा---

ममता री मूरत!

● **साध्वी प्रभातप्रभा** ●

ममता री मूरत!
कठै स्यूं म्है लावां।
बताओ शासनमाता आज होऽऽ
थांरो वत्सल हाथ सिर पर कियां म्है पावां।
बताओ महाश्रमणी जी आज।।

चालणो, बोलणो, खाणो सिखायो, सब पर हैं थांरा उपकार
तपते सूरज में कियां संयम पाला, सीखां थांरी घणी सुखकार
इत्ता जल्दी कियां थे पधार्‌या, बोलो बताओ ओ राज।।

प्रशासन शैली घणी अलबेली, सबने संभाल्यो सतिवर आप
आंख्यां ही आंख्यां में कह देता सब कुछ, ऐसी अनूठी थांरी धाक
पाँच दशक दिलां पर राज कर्‌यो थे, श्रमणीगण सरताज।।

वेदना-समता में जंग छिड़ी थी, साक्षी हो चतुर्विध समाज
पल-पल पवित्रता विजयी बणी थी, दुर्लभ अवसर दिल्ली खास
थांरी गौरव गाथा कै गावां, गुरुवर ने हो थां पर नाज।।
(तुलसी/महाप्रज्ञ/महाश्रमण)

होली रे दिन सै रंग फीका करग्या, रंगा रा थे बड़ा कलाकार
निर्माता स्यूं मिलणे री जल्दी कै लागी, कांई बठै पड्‌यो हो उपहार
छोटी-मोटी सै सतियां बुलावे, आओ पधारो सतीराज।।

लय : बाई चाली सासरिये----

जय-जय शासनमाता

● **साध्वी अर्हतप्रभा** ●

जय-जय शासनमाता।
अणमापी समता ही थांरी, दूरदर्शिता सब स्यूँ न्यारी।
जावां बार-बार बलिहारी।।

वत्सलता री मूरत प्यारी, सहनशीलता गजब तुम्हारी।
सुण-सुण चकरावै नर-नारी।।

दीव्य साधना, उपशम धारी, स्वाध्यायशीलता री फुलवारी।
थारै चरणां रा आभारी।।

अद्‌भुत ज्ञान-पिपासा भारी, शम-श्रम-सम अनुपम सहचारी।
शासनमाता अमृतझारी।।

तुलसी प्रभुवर स्यूँ इकतारी, महाप्रज्ञ गण केशर-क्यारी।
गुरुवर आब बढ़ाई थांरी।।

म्हांनै पल-पल याद सतावै, आँख्या आँसूड़ा ढ़लकावै।
मनड़ो भर-भर के आवै।।

महाश्रमण सन्निधि सुखकारी, ज्योतिचरण है महाउपकारी।
दिल्ली राजधानी मनहारी।।

लय : धरती धोरां री----

✦ *दुनिया का सबसे बड़ा मंगल धर्म है। धर्म के तीन आयाम बताए गए–अहिंसा, संयम और तप।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

तेरापंथ टास्क फोर्स का फिजिकल मिशन एम्पावरमेंट कार्यक्रम

मुंबई।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, अंधेरी द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स के फिजिकल मिशन एम्पावरमेंट का कार्यक्रम गूंदवली स्कूल अंधेरी में किया गया। एनडीआरएफ द्वारा प्रशिक्षित तेरापंथ टास्क फोर्स के कैडेट्स पामेचा एवं सहयोगी के रूप में मेहुल एवं हर्ष चोरड़िया द्वारा आशा डिग्री कॉलेज एवं गूंदवली विद्यालय में जीवनरक्षक तकनीकों पर एक प्रस्तुतिकरण दिया गया। तेरापंथ टास्क फोर्स के ट्रेनिंग संयोजक जय चोरड़िया भी वर्चुअल रूप से इस कार्यक्रम में जुड़े एवं अपनी सेवाएँ दी।

फिजिकल मिशन एम्पावरमेंट के इस कार्यक्रम में लगभग ३०० बच्चों को मेडिकल आपदा से निपटने के गुर सिखाए गए।

अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी ने बताया कि किस प्रकार अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ टास्क फोर्स महत्त्वपूर्ण एवं जीवनरक्षक जानकारी जन-जन तक पहुँचा रहा है। इन विभिन्न तकनीकों को सीखकर हम एक मेडिकल फर्स्ट रिस्पांडर के रूप में कई लोगों की जान बचा सकते हैं। तेयुप के अध्यक्ष दिनेश नौलखा ने सभी का स्वागत किया एवं कार्यक्रम को सभी के लिए महत्त्वपूर्ण बताया तथा इस प्रकार के कार्यक्रम सभी स्कूलों में करने पर जोर दिया।

तेयुप, अंधेरी के मंत्री चंद्रेश गुंदेचा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम संयोजन में तेयुप अंधेरी के सभी कार्यकर्ताओं ने विशेष भूमिका निभाई। अभातेयुप सदस्य जितेंद्र परमार, दिनेश सिंघवी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में जोन सहयोगी दीपक समदरिया का विशेष सहयोग रहा।

कार्यक्रम का संचालन विनोद सोलंकी ने किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग के रूप में विजय धाकड़ एवं कमलेश भंसाली ने अपनी सेवाएँ दी।

रक्तदान शिविर का आयोजन

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन लॉयन्स ब्लड बैंक के सहयोग से ब्लड व्हील्स के तहत अंगुड़ी पुलिस क्वार्टर्स के प्रांगण में आयोजित किया गया।

रक्तदान प्रभारी सुधीर पोखरना ने सभी का स्वागत करते हुए व्यवस्था की सार-संभाल की। अंगुड़ी पुलिस क्वार्टर्स के परिवारजन द्वारा जनहित हेतु रक्तदान में सहयोग दिया। पुलिस ऑफिसर बी०वी० भंडारी ने स्वयं रक्तदान किया व उच्च अधिकारियों से परामर्श कर और ज्यादा रक्तदान शिविर का आयोजन करने हेतु व्यवस्था प्रदान करने का आश्वासन दिया।

तेयुप, बैंगलुरु अध्यक्ष विनय बेद व महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद कोषाध्यक्ष सुरेश संचेती, जितेंद्र कोचर, संदीप चोपड़ा, ज्योति संचेती की उपस्थिति रही। ब्लड ऑन व्हील्स शिविर से कुल २० यूनिट रक्तदान का सहयोग प्राप्त हुआ। सभी के प्रति मंत्री प्रवीण बोहरा ने आभार व्यक्त किया।

जोड़ चेकअप शिविर का आयोजन

रायपुर।

अभातेयुप के महनीय उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेंटल केयर, रायपुर में तेयुप द्वारा जोड़ चेकअप शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविख्यात अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ० धीरज मरोठी जैन के टीम मेंबर डॉक्टर सिद्धार्थ कुमार परामर्श हेतु उपस्थित हुए।

इस कैंप का लाभ ६ लाभार्थियों ने उठाते हुए एटीडीसी की अन्य सेवा योजनाओं का भी लाभ लेने के साथ परामर्श कैंप की सराहना की। परामर्श कैंप में एटीडीसी में कार्यरत सदस्यों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। परामर्श शिविर में गौतम गोलछा, नवरतन डागा, निर्मल बैंगानी, मनीष गादिया, वीरेंद्र डागा की उपस्थिति रही।

शासनमाता की स्मृति सभा

भुज।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। स्मृति सभा की शुरुआत लता बहन शाह और वर्षा बहन दोशी ने मंगलाचरण से किया। १५ मिनिट तक सामुहिक नवकार मंत्र का जप किया गया।

स्मृति सभा में तेरापंथ महासभा के कार्यकारिणी सदस्य शांतिलाल बागरेचा, तेरापंथ सभा के मंत्री धनसुख भाई कुबड़िया, तेमम की अध्यक्षा जयश्री बहन खंडोर, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नरेंद्र भाई मेहता, तेयुप के मंत्री महेश गांधी सहित सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों ने शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

तेयुप के संगठन मंत्री आदर्श संघवी ने अपने भावों द्वारा भावांजलि अर्पण की एवं आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। स्मृति सभा का संचालन तेयुप के अध्यक्ष आशीष भाई बाबरिया ने किया।

सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

गुरुकुल विद्यापीठ, केंगेरी में निवासित १३० निराश्रितों को भोजन करवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। परिषद के पूर्व अध्यक्ष एवं परामर्शक राजेश भंसाली ने प्रायोजक परिवार से उपस्थित हनुमानमल संजय बैद परिवार का स्वागत एवं सम्मान किया तथा उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया।

इस अवसर पर परिषद के उपाध्यक्ष धर्मेश नाहर, मंत्री विकास छाजेड़, परिषद परामर्शक राजेश भंसाली, सेवा कार्य प्रभारी, सहप्रभारी सुपारस पटावरी सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों का सहयोग रहा।

मंत्री विकास छाजेड़ ने सभी युवकों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

भूल पाएगा नहीं उसको जमाना

● **मुनि ध्रुवकुमार** ●

चित्र तेरा है बसा मेरे हृदय में
जिंदगी का सफर था कितना सुहाना।
झपकते ही पलक बुझ गई दिव्य जोती
क्या हुआ कैसे हुआ कुछ भी न जाना।।

सीन तुमने बहुत से हमको दिखाए
कृपा को कर याद फूला ना समाऊं।
नींव में मुझको मिला है स्नेह तेरा
अब विरह की पीर मैं किसको सुनाऊं।
मोह-वश जो भी कभी पीछे रहा हो
तुम्हे आता था उसे फिर से बढ़ाना।।

है नहीं अनुभव मुझे दादा-गुरु का
पर सुनी है बहुत सी गाथाएं उनकी।
झलकती हैं झलकियां तुम में ओ माते!
मैं सुनाऊं भावना अपने सुमन की।
दिए तुमने सूत्र नित आगे बढ़न के
(अब) हो सके तो स्वप्न में आकर बताना।।

चमकता था तेज कलियों के वलय में
प्राप्त था शिक्षण महाश्रमणीवरं का।
दीखता था सजगता का रंग जिनमें
प्राप्त संरक्षण महाश्रमणीवरं का।
आज प्रायः सजल है सबकी निगाहें
गण-चमन का दर्द तुमने ना पिछाना।।

अहो! अहो! मन कृतज्ञता से यूं भरा है
विलक्षण थी, विचक्षण थी कार्यशैली।
गुरुत्रय को जो मिला सहयोग तेरा
शांति की सुषमा सदा गण में है फैली।
दिया तुमने खुले-हाथों से सभी को
भूल पाएगा नहीं उसको जमाना।।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन

सिंधनुर।

पूज्य श्री नरेश मुनिजी एवं शासन रत्न युवा मनीषीश्री शालीभद्रजी आदि ठाणा-२ के सानिध्य में तेरापंथ सभा भवन सिंधनूर मे शासन माता साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र के द्वारा हुई। महिला मंडल से समता जीरावला ने मंगलाचरण किया, महिला मंडल मंत्री सुनीता नाहर ने साध्वी प्रमुखाश्रीजी का जीवन परिचय दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के पूर्व महामंत्री हनुमानजी लुंकड़ ने शासनमाता के साथ बिताए लम्हों को याद करते हुए भाव विभोर हो गए। उपासिका सरोज बाई नाहर और कीर्ति नाहर ने अपने विचार व्यक्त किए। मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष सुजीत ओस्तवात, स्थानकवासी संप्रदाय से जैन रत्न गौतम बंब ने शासनमाता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उप प्रवर्तक पूज्य नरेश मुनिजी म़ सा ने शासनमाता के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वी प्रमुखाश्रीजी को तीन आचार्यों का सान्निध्य प्राप्त हुआ और कहा कि हमारा उनसे कई बार मिलना हुआ, विचार-विमर्श हुआ जिनसे हमे भी प्रेरणा प्राप्त हुई और शासनमाता के प्रति कहा "है समय नदी की धारा जिसमें सब बह जाया करते हैं, कुछ विरले ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं।"

शासन रत्न युवा मनीषीश्री शालीभद्रजी मसा ने अपनी सुंदर गीतिका के द्वारा सबका मन मोह लिया और शासनमाता के बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में स्थानकवासी संप्रदाय के अध्यक्ष श्रेणिकराज छाजेड, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष सुजीत ओस्तवाल, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक छल्लाणी और समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष विजय नाहर ने किया।

ऑनेस्टी इज द बेस्ट पॉलिसी : आचार्यश्री महाश्रमण

भिवानी, ५ अप्रैल, २०२२

तीर्थंकर तुल्य आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातः छोटी काशी के नाम से प्रसिद्ध भिवानी शहर में पधारे। महातपस्वी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी आत्मा के लिए एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है—ईमानदारी, नैतिकता, Honesty is the best policy अंग्रेजी के इस सूक्त को याद करना भी अच्छा है। विद्यार्थियों को ऐसे सूक्त पढ़ने-सुनने को मिलते हैं, उनमें कुछ संस्कार निर्माण हो सकता है।

आदमी के लिए जैसे पैसा एक संपत्ति होती है, गृहस्थ जीवन में तो आदमी सोचे कि ईमानदारी भी एक संपत्ति है। पैसा बाह्य संपत्ति है और ईमानदारी आत्मा की संपत्ति है। पैसा चला भी गया तो आत्मा का कुछ नुकसान नहीं है, परंतु ईमानदारी चली गई तो आत्मा के अहित की बात है। यह एक प्रसंग से समझाया कि आदमी के पास सत्य

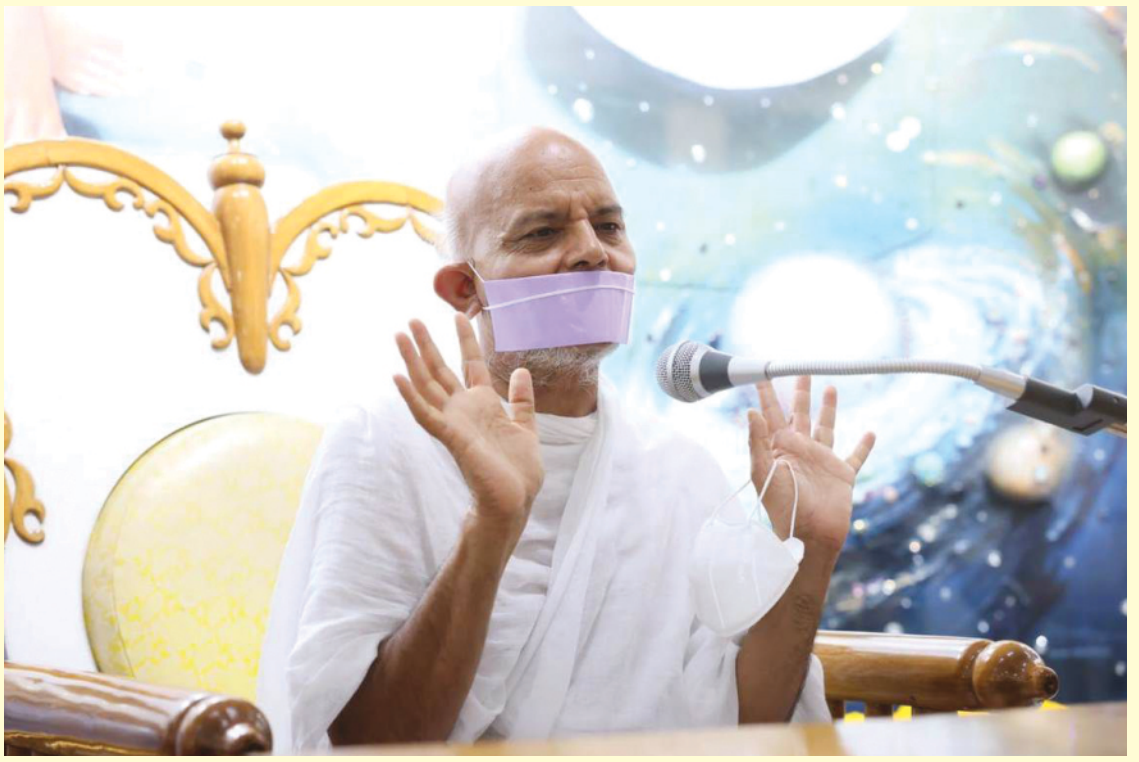

रूपी संपत्ति है, तो बाह्य लक्ष्मी आएगी ही।

लक्ष्मी चंचल होती है, आदमी के प्राण भी चंचल हैं, जीवन और जवानी भी चंचल है, यह चलाचल संसार है, इसमें धर्म एक निश्चल तत्त्व हो सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने दो शब्द बताए हैं—अर्थ और अर्थाभास। न्याय से उपार्जित धन अर्थ होता है। अन्याय नीति से कमाया गया पैसा अर्थाभास है।

गृहस्थ जीवन में अर्थ का अर्जन बुरी बात नहीं होती है। आवश्यक भी हो सकती है। बुरी बात वह हो सकती है, जब अर्थ के साथ अनैतिकता जुड़ जाती है। अशुद्धता जुड़ जाती है। घर में अशुद्ध पैसा न आए। धर्म या धार्मिक संस्था के साथ अशुद्धता न आए। सत्य-ईमानदारी ही हमारे जीवन की संपत्ति है। जहाँ सत्य है, वहाँ लक्ष्मी भी रहती है। लक्ष्मी से ज्यादा सत्य को महत्त्व दें। आग्रह के साथ रखें।

जिंदगी में सत्य और लक्ष्मी दोनों में चुनाव करना हो तो सत्य का ही वरण करें। सत्य हमारी आत्मा की संपत्ति है। यह आगे जाने वाली है, पैसा नहीं। धर्म का प्रभाव आगे जा सकता है। पैसे का ज्यादा भरोसा नहीं करना चाहिए कि वह कब तक टिकेगा।

धन के साथ धर्म को जोड़ दें। लोग पैसे का समाजहित में उपयोग भी करते हैं। प्रश्न है कि दान कितना किया, बेईमानी से धन कितना कमाया, ऐरण की चोरी और सूई का दान। आदमी पैसा अर्जन में ज्यादा से ज्यादा ईमानदारी रखने का प्रयास करे। दुकानदार हो या ग्राहक, दोनों ही ईमानदार हो। हर कार्य में ईमानदार रहे।

ईमानदार व्यक्ति पर ही विश्वास जमता है। बेईमान या ठग पर नहीं। ईमानदार को आर्थिक दृष्टि से भी लाभ हो सकता है। ईमानदार होना आत्मा की दृष्टि से, धर्म की दृष्टि से और शांति की दृष्टि से बहुत अच्छा तत्त्व है। अणुव्रत में भी ईमानदारी, संयम, नैतिकता की बात आती है। धर्म की दृष्टि से देखें तो अहिंसा-सच्चाई को कौन धर्म बढ़िया नहीं मानता।

ये अच्छी बातें जीवन में आएँ। जाति, संप्रदाय, धर्म आदि के आधार पर हिंसा को मौका न मिलेगा। भारत में अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। इंसान पहले इंसान फिर हिंदु या मुसलमान। सब हिंसा से बचने का प्रयास करें। विश्व में भी शांति-मैत्री रहे। कोई समस्या हो तो शांति-वार्ता से सुलझाने का प्रयास करें। मानव जीवन के लिए अहिंसा, सद्भावना, मैत्री, नशामुक्ति आवश्यक है ताकि जीवन अच्छा रह सके। संयम, शांति रहे, नैतिकता रहे।

आज भिवानी आना हुआ है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के साथ यहीं प्रेक्षा विहार में चतुर्मास किया था। भिवानी जिसे छोटी काशी कहा जाता है, यहाँ की जनता में विद्वता के साथ चरित्रशीलता रहे, शांति रहे, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय सभा अध्यक्ष महेंद्र जैन, प्रेक्षा विहार से अशोक जैन, जीवन-विज्ञान योग ट्रस्ट से शिवरतन गुप्ता, सामुहिक स्वागत गीत (महिला मंडल, सभा, तेयुप व कन्या मंडल) द्वारा शशि रंजन पंवार, भिवानी मुख्य उपायुक्त आर०एस० ढिल्ला, प्रमुख समाज सेवी बृजलाल सर्राफ, निरंकारी संत समाज से बलदेवराम नागपाल, संत चरणदास, उपमुख्यमंत्री के प्रति विजय गोठला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। स्वागत समारोह का संचालन सुरेंद्र जैन ने किया।

ज्ञानशाला पिकनिक एवं वार्षिक उत्सव

कोलकाता।

वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल अंचल में हिंदमोटर ज्ञानशाला में पिकनिक एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इसमें लगभग २३ बच्चे, सभा के अध्यक्ष मनोज कुंडलिया, मंत्री एवं सभी पदाधिकारी और सभी प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित थीं। आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। बच्चों के लिए संगीत, फैंसी ड्रेस आदि प्रतियोगिताएँ रखी गईं एवं अंत में पुरस्कार वितरण किए गए।

वर्ष में सर्वाधिक उपस्थिति के लिए इस कार्यक्रम में जो भी गेम हुए उसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

धर्म की साधना केवल धर्मस्थान पर...

(पृष्ठ १२ का शेष)

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभा अध्यक्ष दर्शन जैन, महिला मंडल अध्यक्षा सरोज जैन, तेयुप अध्यक्ष मुदित जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष अशोक जैन, हरियाणा प्रांतीय तेरापंथी सभा अध्यक्ष अशोक जैन, महिला मंडल समुह गीत, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, अग्रवाल समाज महिला मंडल, सभा मंत्री धनराज जैन, विवेक जैन (अग्रवाल विकास ट्रस्ट), राहुल कक्कड़, व्यापार मंडल प्रधान प्रवीण तायल, एमएलए विनोद, एसडीएम डॉ० जितेंद्र, पूर्वमंत्री सुभाष गोयल, पूर्वमंत्री तरसेन सैनी, श्यामबाबा ट्रस्ट से जगदीश मित्तल, रमेश गोयल रवींद्र जैन, सचिन जैन (आम पार्टी), के०के० जैन, दिनेश जैन, प्रीतम जैन व सुभाष माडावाले ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने दीपक के महत्त्व को समझाया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 - 24 अप्रैल, 2022

✦ *व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

धर्म की साधना केवल धर्मस्थान पर ही नहीं व्यापारिक स्थान पर भी होनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

हांसी, ८ अप्रैल, २०२२

ऐतिहासिक नगरी हांसी, हरियाणा प्रांत की तेरापंथ की राजधानी हांसी, गुरु भक्ति में ओत-प्रोत श्रावक समाज हांसी। तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः हांसी शहर में पधारे। हांसी की गली-गली और जन-जन परम पावन के स्वागत में पलक पावड़े बिछाए स्वागत में खड़े थे।

नैतिक मूल्यों के पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने हांसीवासियों को मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी को अपने जीवन में यथा-औचित्य उम्र के साथ मोड़ भी लेना चाहिए। सदा एक सा समय नहीं रहता है। युवावस्था में व्यक्ति भाग-दौड़ कर सकता है वो ७० की उम्र में नहीं।

७० वर्ष की अवस्था में तो ज्यादा समय धर्म साधना मे लगाना चाहिए। माता-पिता का एक फर्ज यह माना जा सकता है कि संतान को शिक्षित कर देना। वह माता शत्रु है, पिता दुश्मन है, जो अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं। साथ में संस्कार अच्छे देते नहीं हैं।

आदमी के कई बार बुरे दिन आते हैं, तो पहले उसकी बुद्धि खराब होती है, वह बुरे मार्ग पर चला जाता है और सब कुछ गँवा सकता है। जो पढ़ा-लिखा होता है और जिसका भाग्य साथ देता है, वो आगे भी बढ़ सकता है।

अर्थ-अर्जन गृहस्थ जीवन में आवश्यक हो सकता है, उसके बिना काम भी नहीं चलता है। अर्थ-अर्जन के लिए आदमी कई व्यापार-धंधे भी करता है। व्यापार में व्यक्ति नैतिकता कितनी रखता है, वह महत्त्वपूर्ण बात है। दुकानदार ईमानदार रहे। धर्म स्थान में तो धर्म की साधना होती है, पर व्यापार में भी धर्म रहे। इससे अच्छे संस्कार आ सकते हैं। कर्म के साथ धर्म जुड़े। आदमी नैतिकता-ईमानदारी के प्रति रूझान रखे। बेईमानी-धोखाधड़ी न हो।

दुकान को शुद्ध रखने का उपाय है–ईमानदारी।ईमानदारी से सब जगह विश्वास जग जाता है। बेईमानी से तत्काल फल मिल सकता है, पर दीर्घकालीन दृष्टि से देखें तो बेईमानी नुकसानदेह हो सकती है। ईमानदारी से आत्मा अच्छी, चेतना शुद्ध रहती है। ईमानदारी से लंबे समय में लाभ भी ज्यादा हो सकता है। ईमानदारी सर्वत्र पूजनीय है।

पिता का अधिकार है कि वो मौके पर उलाहना भी दे सकता है। पुत्रों का फर्ज है कि पिता की अवज्ञा न करें। पिता पूजनीय होता है, उनके उलाहने को बुरा नहीं मानना चाहिए। पिता के लिए कमाई करने वाला सबसे अच्छा बेटा हो सकता है।

जिनेश्वर भगवान हमारे पिता के समान हैं। उनकी हम संतानें हैं। संतानें तीन प्रकार की हो सकती हैं। मनुष्य जन्म मिलना एक लाख की पूँजी है। जो आदमी इसको बुरे कामों में गँवा देता है, वह बड़े बेटे के समान हो जाता है। पापों में जो जीवन बिताता है, वो मरकर नरक या तिर्यंच गति में जाता है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो न ज्यादा धर्म करते हैं न ज्यादा पाप करते हैं, वे मरकर वापस मनुष्य बन जाते हैं। कुछ लोग त्याग, तपस्या, संयम-साधना करके मरकर या तो देवगति में चले जाते हैं, या कोई मोक्ष में चला जाए। वह छोटे बेटे के समान है। गृहस्थ सोचे कि जीवन की गाड़ी ठीक चल रही है या गड़बड़ी है।

जीवन में ईमानदारी है, अहिंसा की भावना है, संयम है, साथ में धर्म-ध्यान भी चलता है तो मानना चाहिए कि जीवन की गाड़ी ठीक चल रही है। ये सब जीवन में नहीं है तो जीवन में सुधार करने की अपेक्षा है। गृहस्थ एक सद्-गृहस्थ के रूप में रहे।

हमारे नवमें गुरु आचार्य तुलसी थे, जिनको आप कईयों ने देखा होगा। दसवें गुरु आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी थे, जो बड़े विद्वान थे। हरियाणा भी पधारे थे। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान आदि योग साधना से अध्यात्म की साधना करें। साधना के द्वारा इस मानव जीवन को धन्य बनने का प्रयास भी किया जा सकता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जो ऐश्वर्य संपन्न होता है, वह भगवान होता है। आज आपके यहाँ तेरापंथ के भगवान आए हैं। आप आध्यात्मिक ऐश्वर्य से संपन्न है। वह ऐश्वर्य आपको अपनी साधना से, पवित्रता से प्राप्त है। आचार्यप्रवर का प्रशम भाव, उपशम भाव बढ़ता ही जा रहा है। आपकी वचन की शुद्धि भी एक कठोर साधना है। आचार्यप्रवर के कार्य शुद्धि भी हो जो ब्रह्मचर्य से प्राप्त होती है। आचार्यप्रवर का ब्रह्मचर्य का तेज भी विशिष्ट है। हमें पवित्रता पूज्यप्रवर से ही प्राप्त हो सकती है।

साध्वी सिद्धप्रभाजी जिन्होंने पिछला चातुर्मास साध्वी कंचनकुमारी जी लाडनूं के साथ किया था और बाद में साध्वी कंचनकुमारी जी का प्रयाण भी हो गया था ने अपने भाव पूज्यप्रवर के चरणों में अभिव्यक्त किए।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

यादें... शासनमाता की - (५)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

१० मार्च, २०२२, प्रातः ७ बजे परम पूज्य आचार्यप्रवर पधारे। वंदना के पश्चात्–

आ०प्र० : रात में कैसे रहा?

सा० सुमतिप्रभा : बैचेनी रही, नींद बहुत कम आई।

आ०प्र० : पाठ कर लें?

सा०प्र० : कृपा करवाएँ।

फिर आ०प्र० ने महावीरत्थुई का पाठ किया।

सा०प्र० : आ०प्र० बहुत कृपा करवा रहे हैं। सुबह-सुबह इतना समय लगा रहे हैं।

आ०प्र० : मैं कुछ बात बताऊँ? आपके साता है ना?

सा०प्र० : तहत् (फिर सोने का इशारा किया)।

आ०प्र० : आप भले पोढ़ाओ। (लेटिए) मैं इस प्रकार करता हूँ जिससे आपको न तो गर्दन मोड़नी पड़े और न ही मस्तक ऊँचा करना पड़े। मैं यहीं से खड़े-खड़े बोलता हूँ। संत भी कुछ खड़े हैं, कुछ बैठे हैं, खास बात नहीं। साधना के अनेक रूप हैं। जैसे मैंने आपसे बोम्बे जाने की बात कही पर आपका मन बोम्बे जाने का कम लग रहा है, ऐसा व्यवहार में लग रहा है।

सा०सुमतिप्रभा : आ०प्र० कल जब वापस पधार गए, तब सा०प्र० जी ने मुझसे कहा कि बंबई तुम्हारा है, तुम जाओ, मेरा तो मन नहीं है।

आ०प्र० : बंबई थोड़ा दूर पड़ जाता है। वैसे भी एक सीमा हो जाए। ज्यादा इधर-उधर घूमना होता नहीं है। मुख्यतया आपका बंबई नहीं जाना ही मानें।

सा०प्र० जी ने स्वीकृति सूचक गर्दन हिलाई।

आ०प्र० : छापर तो दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं है। छापर जाने में भी साधन से धक्के लग सकते हैं। छापर से पहले सरदारशहर है। मैं ऐसे बताना चाहता हूँ कि यात्रा की सीमा हो जाए। वह भी अपने संयम का एक उपक्रम बन सकता है। छापर का भी क्यों रखें? अपेक्षा हो तो हम भी दिल्ली में रह सकते हैं।

द्रव्य की भी सीमा कर सकते हैं। दवा के सिवाय भोजन में ११/१३ द्रव्य की सीमा करवा देते हैं। २ दिन का, ३ दिन का त्याग करवा दें, आप क्या-क्या लेते हैं?

सा० सुमतिप्रभा : उकाली, दलिया, दूध, रस आदि।

आ०प्र० : १५ द्रव्य से ज्यादा तो एक दिन में लगते ही नहीं है?

सा० सुमतिप्रभा : तहत्।

आ०प्र० : आपका मन हो तो यावज्जीवन १५ द्रव्यों की सीमा करवा दें। बड़ों का आगार तो है ही। भाषा बना लें–साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी शासनमाता को प्रत्येक दिन में अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य (औषध, भेषज–ये सब अलग हैं) के कुल मिलाकर १५ द्रव्यों से ज्यादा का भोजन रूप में सेवन करने का यावज्जीवन के लिए त्याग है। ये आहार की सीमा हो गई। वैसे ही गमनागमन की भी सीमा हो सकती है। जैसे विशेष स्थिति के सिवाय दिल्ली से बाहर गमनागमन नहीं करना।

सा०प्र० : दिल्ली में रहकर क्या करेंगे?

आ०प्र० : फिर मेरे साथ ही मानें।

सा०प्र० जी ने हाँ में मस्तक हिलाया।

आ०प्र० : बात हो गई, दिल्ली की इच्छा नहीं है। अगर मैं भी दिल्ली रह जाऊँ तो?

सा०प्र० जी ने फिर स्वीकृति में सिर हिलाया।

आ०प्र० : बात आ गई, मूलतः अभी भी साथ में ही रहना चाहते हैं। प्रायः-प्रायः जीवन का अधिकांश समय गुरुकुलवास में ही बीता है। फिर मुख्य मुनिप्रवर को डायरी में लिखवाया–सा०प्र० ने फरमाया है कि दिल्ली में रहकर क्या करना है? मैं तो शायद पूरा नहीं सुन पाया, ऐसा ज्ञात हुआ। इसका तात्पर्य है–सा०प्र० अभी भी गुरुकुलवास में ही रहना चाहती है और इन क्षणों में सा०प्र० के मुख पर जो प्रसन्नता दिखाई दे रही है। वह बहुत अच्छी लग रही है। उदासीनता का अभाव होना हमें भी अच्छा लग रहा है।

करीब ६:५५ पर आ०श्री पुनः पधारे।

सा०प्र० : गुरुदेव ने कृपा करवाई, अब व्याख्यान में पधारें।

आ०प्र० : कैसे हैं?

सा० सुमतिप्रभा : थोड़ी बैचेनी है। ज्यादा 'जीसोरा' नहीं है।

सा०प्र० : मालिक हो तो ऐसे हों जो इतनी संभाल करते हैं।

आ०प्र० : (साध्वी कल्पलता जी से) होम्योपैथी शुरू कर दी?

सा० कल्पलता : तहत्, शुरू कर दी।

आ०प्र० : ऐलोपैथी चल रही है। होम्योपैथी भी शुरू हो गई। आयुर्वेदिक?

सा०कल्पलता : आयुर्वेदिक डॉ० राजेश जी को जच नहीं रही है।

आ०प्र० : ठीक है, एक बार दो ही दवाई चलाते हैं–ऐलोपैथी और होम्योपैथी। सतियों में नर्सें कितनी हैं?

सा०कल्पलता : उठाने-बिठाने का कार्य तो सा० अनुशासनजी, सुनंदाजी करते हैं। सुमतिप्रभाजी, शशिप्रभाजी भी सहारा देते हैं।

(शेष अगले अंक में)

(क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**